लहूलुहान प्रत्यारोपण

चीन में फालुन गोंग अभ्यासियों के अंगों के निकाले जाने और व्यापार के आरोपों की जांच रिपोर्ट

डेविड माटास
डेविड किलगर

http://organharvestinvestigation.net
http://investigation.go.saveinter.net

A. प्रस्तावना

B. आरोप

C. कार्यशैली

D. प्रमाण की कठिनाइयां

E. प्रमाण जुटाने के तरीके

F. प्रमाण और अप्रमाण के तत्व

a) साधारण विवेचना

1) मानवाधिकारों का उल्लघंन
2) स्वास्थ्य के लिए उपलब्ध धन
3) सेना को धन अनुदान
4½ Hkz"Vkpkj

b) अंग प्रतिरोपण से संबंधित विचार

5) तकनीकी विकास
6) मृत्युदण्ड प्राप्त कैदियों के साथ बर्ताव
7) अंग दान
8) प्रतीक्षा समय
9) वेबसाइट पर दोषास्पद सूचना
10) अंग प्राप्तकर्ताओं के साक्षात्कार
11) इसके द्वारा धन की कमाई
12) चीन में प्रतिरोपण संबंधी नैतिक मूल्य
13) प्रतिरोपण के विदेशी नैतिक मूल्य
14) चीनी प्रतिरोपण कानून
15) विदेशी प्रतिरोपण कानून
16) यात्रा सलाह जानकारी
17) औषधि विज्ञान

18) देखभाल के लिए विदेशों से सरकारी अनुदान

c) फालुन गोंग संबंधित विचार

19) खतरे की आशंका
20) दमन की नीति
21) घृणा को बढ़ावा देना
22) शारीरिक दमन
23) भारी संख्या में गिरफ्तारियां
24) मृत्यु
25) बेनाम लोग
26. रक्त की जांच और अंगों का परीक्षण
27. पूर्व में किये प्रत्यारोपणों का स्रोत
28) प्रतिरोपण के भावी स्रोत
29) गायब अंगों वाली लाशें
30) स्वीकारोक्ति
31) एक अपराध स्वीकृति
32) पुष्टिकारक अध्ययन
33) चीन सरकार का जवाब

G. अतिरिक्त शोध

H. निष्कर्ष

I. सिफारिश

J. टिप्पणी

परिशिष्ट 1 सीआईपीएफजी का आमंत्रण पत्र
परिशिष्ट 2. डेविड मटास की जीवनी
परिशिष्ट 3: डेविड किलगर की जीवनी

A. प्रस्तावना

चीन में फालुन गोंग के दमन की जांच हेतु सांझी संस्था (CIPFG) ने हमें चीन में फालुन गोंग अभ्यासियों के अंगों के निकाले जाने और व्यापार के आरोपों की जांच करने के लिए कहा। साझी संस्था वाशिंगटन डी.सी. अमेरिका में पंजीकृत एक गैर सरकारी संस्था है जिसकी एक शाखा ओटावा, कनाडा में है। आग्रह औपचारिक रूप से पत्र दिनांक 24 मई 2006 को आया जो इस रिपोर्ट के साथ परिशिष्ट में संलग्न है।

आग्रह था कि उन आरोपो की जांच की जाए जिनमें कहा गया था कि चीनी गणराज्य के सरकारी संस्थान और कर्मचारी जीवित फालुन गोंग अभ्यासियों के अंगों को निकाल रहे हैं और इस प्रक्रिया में अभ्यासियों की हत्या हो जाती है। आरोपों की गंभीरता के नजरिये से और साथ ही मानवाधिकारों के प्रति सम्मान के लिए हमारी कटिबद्धता के कारण, हमने आग्रह स्वीकार किया।

डेविड माटास एक आप्रवास, रिफ्यूजी और अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संबंधी वकील हैं जो विनिपेग में निजी प्रैक्टिस करते हैं। मानवाधिकारों के प्रति सम्मान के प्रचार के लिए वे एक लेखक वक्ता और विभिन्न मानवाधिकार संबंधित गैर सरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधि के रूप में जोर–शोर से जुड़े हैं।

डैविड किल्गर एक भूतपूर्व संसद सदस्य और कनाडा की सरकार में एशिया प्रशांत क्षेत्र के लिए भूतपूर्व राज्य सचिव रहे हैं। संसद सदस्य बनने से पहले वे एक वरिष्ठ वकील थे। दोनों लेखकों की आत्मकथाएं इस रिपोर्ट के साथ परिशिष्ट में संलग्न हैं।

B. आरोप

आरोप यह है कि पूरे चीन में फालुन गोंग अभ्यासियों की जीवित अवस्था में अंग निकाले जा रहे हैं और उनका अवैध व्यापार हो रहा है। आरोप है कि अंग निकालने की प्रक्रिया अनिच्छुक फालुन गोंग अभ्यासियों के साथ बहुत से स्थानों पर एक पूर्व नियोजित नीति के तहत, बड़ी संख्या में की जा रही है।

अंग निकालना अंग प्रतिरोपण प्रक्रिया का एक चरण है। अंग निकालने का प्रयोजन है प्रतिरोपण के लिए अंग उपलब्ध कराना। यह आवश्यक नहीं कि प्रतिरोपण इसी स्थान पर किए जाएं जहां अंग निकाले गये हों। दोनों स्थान अक्सर भिन्न होते हैं, एक स्थान पर अंगों को निकालकर दूसरे स्थान पर प्रतिरोपण के लिए भेज दिया जाता है।

इसके आगे आरोप है कि अभ्यासियों के अंग तभी निकाल लिए जाते हैं जब वे जीवित होते हैं। अंग निकाले जाने की प्रक्रिया के दौरान या इसके ठीक बाद ही अभ्यासियों की मृत्यु हो जाती है। ये ऑपरेशन एक प्रकार की हत्या हैं।

अंततः हमें बताया गया कि इस प्रकार मृत अभ्यासियों का शवदाह कर दिया जाता है। अंग प्रतिरोपण का स्रोत जांच के लिए पता करने के लिए शव बचता ही नहीं हैं

कार्यशैली

हमने अपनी जांच "चीन में फालुन गोंग के दमन की जांच हेतु सांझी संस्था", फालुन गोंग ऐसोसिएशन, कोई और संस्था, और किसी सरकार से निष्पक्ष होकर की है। हमने चीन में जाने का असफल प्रयास किया, किन्तु हम जांच को आगे बढ़ाने के लिए बाद में भी जाना चाहेंगे।

जब हमने अपना कार्य आरंभ किया, हमारे कोई विचार नहीं थे कि आरोप सही हैं या गलत। आरोप इतने सनसनीखेज हैं कि वे लगभग अविश्वसनीय लगते हैं। बल्कि हम चाहते थे कि आरोप गलत निकलें न कि सही। आरोप यदि सही हुए तो, एक ऐसी घृणित दुष्टता को सामने लाएंगे जो, मानवजाति ने जितना भी पतन अभी तक देखा है, इस ग्रह पर नया होगा। इसके केवल खौफ से ही हम इसपर विश्वास करने से डगमगा रहे थे। किन्तु विश्वास करने में शंका का यह अर्थ नहीं है कि आरोप असत्य हैं।

हम यू. एस. उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश फेलिक्स फ्रैंकफर्टर द्वारा 1943 में यान कार्सकी के होलोकॉस्ट के बारे बताये जाने पर प्रतिक्रिया में पोलैण्ड के राजनयिक को दिए बयान के बारे में अच्छी तरह जानकार थे। फ्रैंकफर्टर ने कहा था:

> "मैंने यह नहीं कहा कि यह युवक झूठ बोल रहा है। मैंने कहा कि जो उसने मुझे बताया मैं उस पर विश्वास नहीं कर सका। दोनों में अंतर है।"

होलोकॉस्ट के बाद, किसी भी प्रकार की चरित्रहीनता को खारिज करना असंभव है। क्या एक दुष्ट कृत्य हुआ है इसका पता केवल तथ्यों को जानने पर किया जा सकता है।

जून 7, 2006 में ओटावा में, हमारी पहली रिपोर्ट के निकलने के बाद से, हमने रिपोर्ट का प्रचार करने और सिफारिशों को बढ़ावा देने के लिए, व्यापक रूप से यात्रा की हैं। अपनी यात्राओं के दौरान, और पहले संस्करण में यह नई जानकारी सम्मिलित है।

जो कुछ हमें बाद में पता चला उससे हमारे मूल निष्कर्षों में हमारा विश्वास कम नहीं हुआ है। बल्कि जो कुछ हमने बाद में पाया है उससे यह और सत्यापित होता है। हम विश्वास करते हैं कि यह संस्करण हमारे निष्कर्षों के लिए और मजबूत केस बनाता है जो पहले संस्करण ने किया।

D. प्रमाण की कठिनाइयां

आरोपों को, उनकी प्रकृति के कारण ही, सही या गलत साबित करना कठिन है। किसी भी आरोप को साबित करने के लिए सबसे अच्छा प्रमाण चश्मदीद गवाह होता है। किन्तु इस आरोपित अपराध के लिए, किसी चश्मदीद गवाह का होना कठिन है।

फालुन गोंग अभ्यासियों के अंग निकाले जाने के घटनास्थल पर जो लोग उपस्थित हैं, यदि वह वास्तव में होता है, वे या तो अपराधी हैं या पीड़ित। वहां कोई दर्शक नहीं हैं। क्योंकि पीड़ित लोगों की जैसा आरोप है, हत्या और शवदाह कर दिया जाता है, वहां कोई नहीं बचता, और न ही किसी की शव परीक्षा संभव है। कोई बचे हुए पीड़ित लोग नहीं हैं जो बता सकें कि उनके साथ क्या हुआ। अभियुक्त यह स्वीकार नहीं करेंगे जो यदि वे हुए हैं, मानवता के विरूद्ध अपराध। तब भी, भले ही हमें परिपूर्ण स्वीकरण न मिले हों, हमने आश्चर्यजनक संख्या में स्वीकरण जांच के लिए के लिए फोन कॉल द्वारा एकत्रित किये हैं।

अपराध के घटनास्थल पर, यदि अपराध हुआ है, कोई सुराग शेष नहीं बचता। एक बार अंग निकाल लिए जाने पर, ऑपरेशन कक्ष जहां यह हुआ वैसा ही लगता है जैसा कोई दूसरा खाली ऑपरेशन कक्ष।

चीन में मानवाधिकार संबंधी खबरों पर प्रतिबंध के कारण आरोपों का मूल्याकंन करना कठिन हो जाता है। चीन, दुर्भाग्यवश, मानवाधिकार संबंधी पत्रकारों और समर्थकों का दमन करता है। वहां कोई अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता नहीं है। जो चीन के अंदर मानवाधिकारों के उल्लघंन के बारे में रिपोर्टिंग करते हैं उन्हें अक्सर बंदी बना लिया जाता है और कई बार राजकीय गुप्त सूचना को बाहर भेजने का आरोप लगा दिया जाता है। इस संदर्भ में, अनिच्छुक फालुन गोंग अभ्यासियों के अंगों को निकालने के बारे में मानवाधिकार संबंधी गैर सरकारी संस्थाओं की चुप्पी हमें कुछ नहीं बताती।

रेड क्रॉस की अंतराष्ट्रीय कमीटी को चीन में कैदियों को देखने की अनुमति नहीं है। न ही यह अनुमति कैदियों के मानवाधिकार के समर्थन वाली किसी संस्था को है। यह भी सबूत के लिए एक संभावित मार्ग बंद कर देता है।

चीन में सूचना की प्राप्ति का कोई कानून नहीं है। चीन की सरकार से अंग प्रतिरोपण संबंधी मामूली जानकारी प्राप्त करना असंभव है, जैसे वहां कितने प्रतिरोपण होते हैं, अंगों का स्रोत क्या है, प्रतिरोपण के लिए कितना खर्चा लगता है या वह धन कहां जाता है।

हमने इस रिपोर्ट के लिए चीन जाने की अनुमति मांगी। हमारे प्रयासों को अनसुना कर दिया गया। हमने लिखित रूप से उच्चायोग से प्रवेश के लिए शर्तों के बारे में बातचीत के लिए एक बैठक के लिए कहा। हमारा पत्र इस रिपोर्ट के परिशिष्ट में संलग्न है। बैठक के लिए हमारा

आग्रह स्वीकार कर लिया गया। किन्तु जो व्यक्ति डेविड किल्गर से मिला उसकी रूचि केवल आरोपों को खरिज करने में थी न कि हमारी यात्राा की व्यवस्था करने में।

E. प्रमाण जुटाने के तरीके

हमें बहुत से कारकों को देखना पड़ा, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि कुल मिलाकर वे एक पूर्ण तस्वीर बनाते हैं, जिससे आरोप सही या गलत साबित हो सकें। कुल मिलाकर, वे एक पूर्ण तस्वीर बनाते हैं।

सबूत के अनेक भागों, जिनकी हमने जांच की, स्वयं में आरोप का पक्का प्रमाण होना नहीं दर्शाते। किन्तु उनका न होना अवश्य ही इसे अप्रमाणित करता। इन कारकों को एक साथ मिलाकर, विशेषरूप जब वे इतने अधिक हैं, आरोपों के विश्वास योग्य होने का प्रभाव बनता है, जबकि उनमें से किसी एक को अकेले में देखने से ऐसा नहीं होता। जहां अप्रमाण के सभी भाग जो हम जुटा पाये आरोपों को गलत साबित करने में नाकाम रहे हैं, आरोपों के सही होने की संभावना मजबूत हो जाती है।

प्रमाण या तो प्रेरित हो सकते हैं या तार्किक। अपराध संबंधी जांच अकसर तार्किक रूप से की जाती है, जिसमें प्रमाण के अलग–अलग अंशों को एक साथ जोड़ कर एक परिपूर्ण रूप दिया जाता है। हमारी जांच के आगे आये बंधनों के कारण यह तार्किक तरीका अपनाना कठिन हो गया। कुछ अंश जिनमें हम यह पता लगा पाये कि क्या हो रहा है, हांलाकि, उपलब्ध थे, विशेष रूप से जांच के लिए फोन कॉल।

हमने प्रेरित विश्लेषण का भी प्रयोग किया, जिसमें पीछे की ओर जाकर और साथ ही आगे जाकर कार्य किया। यदि आरोप असत्य हैं, तो हम कैसे जानेंगे कि वे असत्य हैं, यदि आरोप सत्य है, तो कौन से तथ्य उन आरोपों से सहमति में होंगे? आरोपों की सच्चाई कौन बयान करेगा, यदि आरोप सच्चे है? इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तरों ने हमारे निष्कर्षों तक पहुंचने में मदद की।

हमने निवारण पर भी ध्यान दिया। क्या सुरक्षा के उपाय होने चाहियें जो इस प्रकार की गतिविधि को होने से रोकेंगे? यदि सुरक्षा के उपाय हैं, तो हमारा निष्कर्ष है कि इस गतिविधि के होने की संभावना कम है। यदि वे नहीं हैं, तब इस गतिविधि के होने की संभावना बढ़ जाती है।

F. प्रमाण और अप्रमाण के तत्व

a) साधारण विवेचना

1) मानवाधिकारों का उल्लघंन

चीन मानवाधिकारों का विभिन्न प्रकार से उल्लघंन करता है। ये उल्लघंन लंबी अवधि से चले आ रहे हैं और गंभीर हैं। फालुन गोंग के अतिरिक्त मानवाधिकार उल्लघंन के दूसरे मुख्य लक्ष्य हैं तिब्बती, ईसाई, उइघर, लोकतन्त्र समर्थी कार्यकर्ता और मानवाधिकार समर्थक। मानवाधिकार उल्लघंन को रोकने के लिए कानून के शासन की मशीनरी जैसे एक निष्पक्ष न्यायपालिका, बंदी बनाये जाने की अवस्था में वकील की मदद, हैबियस कोर्पस, पब्लिक ट्रायल का अधिकार, चीन में नहीं हैं। चीन, इसके संविधान के अनुसार, कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा शासित है। यह कानून द्वारा शासित नहीं है।

कम्यूनिस्ट चीन का अपने ही नागरिकों के विरूद्ध व्यापक, हैरत में डाल देने वाले अत्याचारों का इतिहास रहा है। कम्यूनिस्ट शासन ने नाज़ी जर्मनी और स्टालिनवादी रूस मिलाकर, इससे भी अधिक मासूमों की जान ली है। छोटी लड़कियों की बड़ी संख्या में हत्या कर दी जाती है, छोड़ दिया जाता है और ध्यान नहीं दिया जाता। यंत्रणा बहुतायात में दी जाती है। मृत्यु दण्ड व्यापक है और मनमाने रूप से दिया जाता है। चीन में बाकी सभी देशों को मिलाकर उससे अधिक मृत्युदण्ड दिये जाते हैं। धार्मिक विश्वासों का दमन किया जाता है।

मानवाधिकारों के उल्लघंन का यह सिलसिला, बाकी अनेक कारकों की तरह स्वयं में आरोपों को साबित नहीं करता। किन्तु यह अप्रमाण के एक तत्व को हटाता है। यह कहना असंभव होगा कि ये आरोप चीन मानवाधिकारों के आदर के लिए व्यवस्था से असंगत हैं। जबकि आरोप, स्वयं में, आश्चर्यजनक हैं, वे तब कम आर्श्चजनक हो जाते हैं जब वह देश मानवाधिकरों के रिकॉर्ड में चीन जैसा हो, न कि कोई और देश।

जब चीन में मानवाधिकारों के इतने अधिक उल्लघंन हैं, केवल एक पीड़ित व्यक्ति के बारे में बताना बहुत नहीं है। हम तब भी मानवाधिकार संबंधी वकील गाओ ज़ीशेंग के उत्पीड़न को एक उदाहरण या केस स्टडी की तरह बताना चाहेंगे। यह गाओ थे जिन्होंने हमें पिछली गर्मियों में लिखा था, जिसमें हमें चीन आकर फालुन गोंग के अनुयायी कैदियों के मुख्य अंगों को चुराये जाने के बारे में जांच करने के लिए कहा गया था। इसके बाद से ओटावा के उच्चायोग ने ऐसा करने के लिए कोई वीजा नारी नहीं किया, उसके कुछ समय पश्चात ही उन्हें रोक लिया गया।

गाओ ने राष्ट्रपति हू तथा अन्य नेताओं को तीन सार्वजनिक पत्र लिखे, जिनमें फालुन गोंग के विरूद्ध अनेक दुर्व्यवहार का विरोध किया गया, जिसमें यंत्रणा और हत्या के विशिष्ट केस भी शामिल थे। गाओ ने फालुन गोंग अभ्यासियों के अंगों को निकाले जाने और बेचने के बारे में भी लिखा और निंदा की। उन्होंने जीवित लोगों के अंग निकालने की जांच के लिए सांझी संस्था से जुड़ने की भी अच्छा जाहिर की।

उन पर भड़काने वाली गतिविधियों का अभियोग लगाया गया और दिसंबर 2, 2006 को तीन वर्ष के कारावास की सजा सुनाई गई। हांलाकि एक बीजिंग न्यायालय द्वारा उनका कारावास पांच वर्ष के लिए टाल दिया गया, उनके राजनीतिक अधिकार एक वर्ष के लिए हटा लिए गये। किसी का इस प्रकार दमन जिसकी चिंता केवल मानवाधिकार के सम्मान के लिए थी और विशेषकर फालुन गोंग अभ्यासियों पर अत्याचार के लिए थी, इससे उनकी चिंता मजबूत होती है और हमारी भी।

अंतराष्ट्रीय आंलिम्पिक कमीटी ने, 2001 में, बीजिंग को 2008 का आंलिम्पिक प्रदान किया। बीजिंग ओलिम्पिक निविदा के वाइस प्रेसीडेंट, ल्यू जिंगमिन ने अप्रैल 2001 में कहा था: ''बीजींग को ओलम्पिक खेलों का मेजबान बनाकर आप मानवाधिकारों के विकास में मदद करेंगे।''

किन्तु परिणाम ठीक विपरीत रहे हैं। एम्नेस्टी इंटरनेशनल ने सप्तबंर 21, 2006 में दिए अपने वक्तव्य में कहा: "एम्नेस्टी इंटरनेशनल ने पाया है कि ओलिम्पिक खेलों से पहले चीनी सरकार का मानवाधिकार संबंधी प्रदर्शन चार अहम क्षेत्रों में कमजोर रहा है। मृत्युदण्ड की प्रक्रिया में कुछ सुधार हुआ है, किन्तु दूसरे अहम क्षेत्रों में सरकार का मानवाधिकार रिकॉर्ड और खराब हुआ है।"

अंतरराष्ट्रीय समुदाय, चीन के अहम क्षेत्रों में मानवाधिकार की स्थिति खराब होने पर भी बीजिंग ओलिम्पिक जारी रखने दे रहा है, इससे चीन को यह संदेश जाता है कि भले ही वह मानवाधिकारों का कितना भी उल्लघंन करे, अंतरराष्ट्रीय समुदाय को इसकी कोई परवाह नहीं है।

2) स्वास्थ्य के लिए उपलब्ध धन

जब चीन एक समाजवादी अर्थव्यवस्था से उपभोक्तावदी अर्थव्यवस्था को ओर बढ़ा, तो इसका प्रभाव स्वास्थ्य प्रणाली पर भी पड़ा। 1980 से, चीन स्वास्थ्य के क्षेत्र से सरकारी धन हटाने लगा, इस आशा में कि स्वास्थ्य व्यवस्था उपभोक्ताओं से स्वास्थ्य सेवा के भुगतान द्वारा अंतर को पूरा कर लेगी। 1980 से, सरकार का स्वास्थ्य सेवाओं पर व्यय 36 प्रतिशत से घटकर 17 प्रतिशत रह गया है, जबकि रोगियों की जेब से खर्च 20 प्रतिशत से उछलकर 59 प्रतिशत तक हो गया है। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट ने कहा है कि निजी क्षेत्रों द्वारा कीमत बढ़ाने से सार्वजनिक स्वास्थ्य सुरक्षा की कटौतियों में और गिरावट आई है।

हृदय रोग के डॉक्टर हू वेमिन के अनुसार, अस्पताल के लिए सरकारी धन अनुदान जहां वह कार्य करता है इतना भी नहीं है कि कर्मचारियों का एक महीने का वेतन भी निकल सके। उसने कहा: "वर्तमान व्यवस्था में, अस्पतालों को चलते रहने के लिए लाभ के पीछे पड़ना होगा।'' 'चीन में मानवाधिकार' ने रिपोर्ट किया है: ''ग्रामीण अस्पतालों को समुचित आमदनी के लिए धन कमाने के लिए कई मार्ग ईजाद करने पड़े।''

अंगों कि बिक्री अस्पतालों के लिए आमदनी का एक स्रोत बन गई, उनके द्वार खुले रखने का एक मार्ग, और एक जरिया जिसके द्वारा दूसरी स्वास्थ्य सेवाएं समाज को उपलब्ध कराई जा सकती थी। यह देखा जा सकता है कि धन की यह महान आवश्यकता पहले इसे तर्कपूर्ण बनाती है कि उन बंदियों के अंग निकालना जिन्हें वैसे ही मृत्युदण्ड की सजा मिली है स्वीकार्य है और दूसरे यह इच्छा कि ज्यादा पूछताछ न की जाए कि जिन कैदियों को अंग निकालने के लिए लाया गया है क्या वे वास्तव में मृत्युदण्ड प्राप्त हैं।

3) सेना को धन अनुदान

स्वास्थ्य सेवाओं की तरह सेना भी सरकारी धन अनुदान से निजी व्यवसाय की ओर बढ़ी है। चीन में सेना एक मिला–जुला व्यवसाय। यह व्यवसाय कोई भ्रष्टाचार नहीं है, किन्तु राजकीय नीति से भटकाव अवश्य है। सैन्य गतिविधियों के लिए धन एकत्रित करना एक स्वीकृत जरिया है, यह सरकार द्वारा स्वीकृत है। 1985 में तब के राष्ट्रपति देंग श्याओपिंग ने एक निर्देश निकाला था जिसमें पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के दलों को उनके बजट में हुई कटौती को पूरा करने के लिए धन कमाने की स्वीकृति दे दी गई।

चीन में अनेक अंग प्रतिरोपण सेंटर और सामान्य अस्पताल सैन्य संस्थान हैं जिनकी धन व्यवस्था अंग प्रतिरोपण के प्राप्तकर्ताओं द्वारा होती है। सैन्य अस्पताल स्वास्थ्य मंत्रालय से स्वतंत्र कार्य करते हैं। जो धन वे अंग प्रतिरोपण से कमाते हैं वह इन सेवाओं के खर्चों से भी अधिक है। धन का प्रयोग कुल सैन्य बजट की पूर्ति के लिए भी किया जाता है। उदाहरण के लिए, बीजिंग के सैन्य पुलिस अस्पताल का अंग प्रतिरोपण सेंटर। वह अस्पताल स्पष्ट कहता है:

''हमारा अंग प्रतिरोपण सेंटर धन अर्जित करने में हमारा मुख्य विभाग है। इसकी कुल आय 2003 में 16,070,000 युआन थी। जनवरी से जून 2004 तक आय 13,570,000 युआन थी। इस वर्ष (2004) में आशा है कि आय 30,000,000 युआन से भी आगे चली जाएगी।''

सेना की अंग प्रतिरोपण में सांठ–गांठ सिविलियन अस्पतालों तक थी। प्राप्तकर्ता अक्सर हमें बताते हैं कि, जब उन्हें अंग सिविलियन अस्पताल में प्राप्त हुए, जिन्होंने चिकित्सा की वे सैन्य कर्मचारी थे।

यहां एक उदाहरण है। जब हम एशिया में अपनी रिपोर्ट का प्रचार कर रहे थे, हम एक व्यक्ति से मिले जो 2003 में एक नई किडनी प्राप्त करने के लिए शंघाई गया था, जिसकी कीमत उसके जाने से पहले 20,000 अमेरीकी डॉलर तय की गई। उसे सर्वश्रेष्ठ सार्वजनिक अस्पताल में ठहराया गया– जो एक सिविलियन सुविधा – और आने वाले दो हफ्तों में उसके रक्त और दूसरे कारकों के टेस्ट के लिए चार किडनियां लाई गईं। उसकी ऐंटी–बॉडिज के कारण कोई उपयुक्त नहीं रहीं; और सभी वापस ले जाई गई।

इसके बाद वह अपने देश लौट गया, और दो महीने बाद उस अस्पताल में दोबारा पहुंचा। चार और किडनियों को टेस्ट किया गया; जब आठवीं उपयुक्त पायी गई, प्रतिरोपण चिकित्सा सफलतापूर्वक कर ली गई। उसकी आठ दिनों तक देख–रेख पीपुल्स लिबेरेशन आर्मी के नं. 85 अस्पताल में की गई। उसका सर्जन डॉ. तान ज्यानमिंग था जो नानाजिंग सैन्य क्षेत्र से था, जो सिविलियन अस्पताल में भी सैन्य वर्दी पहनता था।

तान अपने साथ कागजों की एक गड्डी लिए रहता था जिसमें होने वाले ''दान कर्ताओं'' की सूची रहती थी, जो विभिन्न ऊतकों और रक्त वर्गीकरण पर आधारित थी, जिनसे वह नाम चुनता था। डॉक्टर को कई बार वर्दी में अस्पताल में बाहर जाते हुए देखा गया और 2–3 घंटे बाद जब वह लौटता तो उसके पास डिब्बों में किडनियां होतीं। डॉ. तान ने प्राप्तकर्ता को बताया कि आठवीं किडनी एक मृत्युदण्ड दिये कैदी से आई है।

सेना की जेल और कैदियों तक पहुंच है। उनके ऑपरेशन सिविलियन सरकार के ऑपरेशन से अधिक गोपनीयता से किये जाते थे। वे कानून के शासन से प्रभावमुक्त हैं।

4) भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार चीन भर में एक मुख्य समस्या है। गई बार राजकीय संस्थान उन लोगों के लाभ के लिए चलाये जाते हैं जो इनके प्रशासक हैं न कि जनता के लाभ के लिए। कई बार, चीन में ''भ्रष्टाचार मिटाने'' की मुहिम चलाई जाती है।

किन्तु, कानून के शासन और लोकतंत्र के अभाव में, जहां गोपनीयता का बोलबाता है और सार्वजनिक धन का सार्वजनिक लेखा नियंत्रण नदारद है, ये भ्रष्टाचार विरोधी मुहिम शक्ति प्रदर्शन अधिक दिखाई पड़ते हैं न कि वास्तविक भ्रष्टाचार विरोधी मुहिम। वे जनता की भ्रष्टाचार के विरूद्ध चिंता को शांत भर का प्रयास हैं, और जन संपर्क की राजनीतिक मुहिम हैं।

अंगों की बिक्री एक धन से उत्पन्न समस्या है। किन्तु वह यह कहने से भिन्न है कि यह एक भ्रष्टाचार की समस्या है। अनिच्छुक दानकर्ताओं के अंगों की बिक्री घृणा को लालच से मिलाती है। उत्पीड़न की एक राजकीय नीति को धन के लिए लाभ का रूप मिल जाता है।

भूतपूर्व चीनी राष्ट्रपति देंग श्याओपिंग ने कहा था: ''अमीर बनना यशप्रद है।'' उन्होंने यह नहीं कहा कि अमीर बनने के कुछ रास्ते शर्मनाक हैं।

धन कमाने वाले अस्पताल उनके क्षेत्रों में मूक बंदी बना कर रखे लोगों का लाभ उठाते हैं। जेलों में लोग बिना किसी अधिकार के होते हैं, और अधिकारियों के रहमो करम पर होते हैं। बंदियों के विरूद्ध घृणा भड़काना और उनके साथ अमानवीय व्यवहार का अर्थ है कि जो लोग

इस घृणा संबंधी प्रचार के साथ हामी भरते हैं उन्हें इसकी भी चिंता नहीं होगी यदि इन लोगों को मार भी दिया जाये।

b) अंग प्रतिरोपण से संबंधित विचार

5) तकनीकी विकास

अल्बर्ट आइंसटाइन ने लिखा थाः
''परमाणु शक्ति के विस्फोट ने सभी कुछ बदल दिया है केवल हमारे सोचने के तरीके को छोड़ कर... इस समस्या का समाधान मानवजाति के हृदय में है। यदि यही मुझे पता होता तो मैं एक घड़ीसाज बन जाता।''

तकनीकी विकास से मानव हृदय में परिवर्तन नहीं आता। किन्तु वे हानि पहुंचाने की योग्यता में अवश्य परिवर्तन ला सकते हैं।

प्रतिरोपण चिकित्सा में हुए विकास में मानवजाति को खराब अंगों से निजात पाने की योग्यता अवश्य मिली है। किन्तु प्रतिरोपण चिकित्सा के इन सुधारों से हमारे सोचने के तरीके में कोई परिवर्तन नहीं आया है।

ऐसी मानसिकता रही है कि किसी नये चिकित्सकीय विकास को मानवजाति के लाभ के रूप में सोचा जाता है। वह अवश्य ही इसके आविष्कारकों की मानसिकता रहती है। किन्तु चिकित्सकीय अनुसंधान, भले ही वह कितना उन्नत हो, उसे उसी अच्छाई और बुराई की पुरानी योग्यता का सामना करना पड़ता है।

प्रतिरोपण चिकित्या में और उन्नत तकनीकों का यह अर्थ नहीं हे कि चीनी राजनीतिक व्यवस्था भी उतनी ही उन्नत हो जाएगी। चीनी कम्युनिस्ट व्यवस्था अभी भी है। चीन में प्रतिरोपण चिकित्सा में विकास यातना, भ्रष्टाचार, दमन के शिकार हो जाते हैं जिनका चीन में बोलबाला है। प्रतिरोपण में उन्नति पुराने कैडरों को अपना कट्टरपन और विचारधार निभाने का नया नजरिया दे देता है।

हम यह सलाह नहीं दे रहे कि जिन्होंने प्रतिरोपण चिकित्सा की शुरुआत की थी उन्हें घड़ीसाज बन जाना चाहिए। हम यह कह रहे हैं कि हमें इतना भी भोला नहीं बन जाना चाहिए कि सोच न सकें कि क्योंकि प्रतिरोपण चिकित्सा का आविष्कार अच्छाई के लिए किया गया था, यह कोई हानि पहुंचा ही नहीं सकती।

इसके विपरीत, चीन में प्रतिरोपण चिकित्सा की उन्नति के विरूद्ध जो आरोप लगाया गया है, वह है कि इसका प्रयोग अनिच्छुक फालुन गोंग अभ्यासियों के अंगों को निकालने के लिए किया जा रहा है, यह ठीक उसी प्रकार है, एक नये परिवेश में, जो शिक्षा अल्बर्ट आइंसटाइन

दे रहे थे। हमने पहले भी देखा है कि मानवता की भलाई के लिए जो आधुनिक तकनीकों का विकास हुआ उनका बिगड़े रूप में नुकसान पहुंचाने के लिए भी प्रयोग हुआ। हमें आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए यदि यह प्रतिरोपण चिकित्सा के साथ भी हुआ है।

6) मृत्युदण्ड प्राप्त कैदियों के साथ बर्ताव

उप स्वास्थ्य मंत्री हुआंग जीफू ने नवंबर 2006 के मध्य में दक्षिण के ग्वागंजू शहर में एक चिकित्सकों के सम्मेलन को संबोधित करते हुए माना था कि मृत्युदण्ड से मृत कैदी अंग प्रतिरोपण के लिए एक स्रोत हैं। उन्होंने कहा : ''कुछ छोटी संख्या में यातायात में मृत लोगों के अलावा, लाशों से अधिकतम अंग मृत्युदण्ड से मृत कैदियों से आते हैं।'' एशिया न्यूज ने लिखा था :

"'चोरी–छिपे होने वाले व्यापार पर पाबंदी होनी चाहिए', श्री हुआंग ने माना कि बहुत बार अंग बिना इच्छा जताए लोगों से आते हैं और विदेशियों को ऊँचे दामों पर बेचे जाते हैं।"

चीन में मृत्यु दण्ड बहुत से अपराधों के लिए दिया जाता है जिनमें शुद्ध राजनीतिक और आर्थिक अपराध भी शामिल हैं जहां यह कहीं प्रतीत नहीं होता कि अभियुक्त ने कोई हिंसात्मक कार्य किया हो। किसी को मृत्युदण्ड न देने से लेकर फालुन गोंग अभ्यासियों की उनकी बिना स्वीकृति के उनके अंगों के लिए हत्या कानून एक बड़ा कदम है। राजनीतिक और आर्थिक कैदियों को मृत्युदण्ड देकर मारने उनकी स्वीकृति के बिना उनके अंगों को निकालने से लेकर फालुन गोंग अभ्यासियों की बिना उनकी स्वीकृति के उनके अंगों के लिए हत्या करना एक छोटा ही कदम है।

यह विश्वास करना कठीन होगा कि कोई राष्ट्र जो किसी की हत्या नहीं करता, जहां मृत्युदण्ड का प्रावधान नहीं है, जहां किसी की स्वीकृति के बिना अंग नहीं निकाले जाते, वह फालुन गोंग अभ्यासियों के बिना उनकी स्वीकृति के अंग निकालेगा। यह विश्वास करना कहीं सरल होगा कि कोई राष्ट्र जो आर्थिक और राजनीतिक अपराधों के लिए मृत्युदण्ड प्राप्त कैदियों के उनकी स्वीकृति के बिना अंग निकालता है वह फालुन गोंग अभ्यासियों को भी बिना उनकी स्वीकृति के उनके अंगों के लिए उन्हें मार सकता है।

जेलों में बंद फालुन गोंग अभ्यासियों को चीनी प्रशासक सताते हैं, अमानवीय बर्ताव करते हैं और अलग कैद करते हैं जो उनसे भी अधिक है गहन अपराधों के लिए मृत्युदण्ड पाये कैदियों के साथ किया जाता है। वास्तव में, यदि दो वगै के लोगों के विरूद्ध केवल सरकारी कटु–प्रचार को देखा जाए तो ऐसा प्रतीत होगा कि फुलन गोंग का मृत्युदण्ड प्राप्त कैदियों से पहले अंग निकालने का लक्ष्य होगा।

7) अंग दान

चीन में अंग दान की कोई व्यवस्थित प्रणाली नहीं है। यह उन सभी देशों से भिन्न है जहां अंग प्रतिरोपण की चिकित्सा होती हैं। जीवित अंग दानकर्ताओं से परिवार के सदस्यों के लिए अंग दान स्वीकृत होते हैं।

हमें बताया जाता है कि चीन में अंग दान के लिए सांस्कृतिक विद्वेष है। किन्तु, होंगकोंग और ताइवान में, जहां संस्कृति एक जैसी है, अंग दान सुलभता से होता है।

चीन में अंग दान व्यवस्था का अभाव हमें दो बातें बताता है। पहली यह कि चीन में अंग दान अंग प्रतिरोपण के लिए संभव स्रोत हैं।

चीन में अंग दान के लिए सांस्कृतिक विद्वेष होने के कारण, एक चुस्त अंग दान व्यवस्था के लिए भी चीन में अब हो रहे अंग प्रतिरोपण की संख्या के लिए अंग उपलब्ध कराना कठिन होता। किन्तु समस्या तब और बढ़ जाती है जब अंग दान को प्रोत्साहित करने के लिए कोई सक्रिय प्रयत्न भी नहीं हैं।

अंग दान दूसरे देशों में बहुत महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि प्रतिरोपण के लिए अंग दान ही प्राथमिक स्रोत हैं। हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि चीन में सक्रिय रूप से अंगदान को प्रोत्साहित न करने का अर्थ यह है कि, चीन के लिए, अंगदान का महत्व ही नहीं है। चीन में बिना दान के ही प्रतिरोपण के लिए इतने अंगों की भरमान है कि अंग दान को बढ़ावा देने की आवश्यकता ही नहीं है।

चीन में अंग दान को बढ़ावा न देने के लिए गंभीर प्रयास का अभाव तथा साथ ही प्रतिरोपण चिकित्सा के लिए कम प्रतीक्षा और प्रतिरोपण की बड़ी संख्या हमें बताते हैं कि चीन में प्रतिरोपण के लिए जीवित अंगों की भरमार है; ऐसे लोगों की भरमार है जो प्रतिरोपण के लिए अंग निकालने के लिए प्रशासकों के हाथों मारे जाने के लिए उपलब्ध हैं। यह सच्चाई जिससे यह आरोप दूर हो सके कि अनिच्छुक फालुन गोंग अभ्यासियों के अंग निकाले जा रहे हैं।

8) प्रतीक्षा समय

चीन में अस्पतालों की वेबसाइट अंग प्रतिरोपण के लिए कम प्रतीक्षा समय का प्रचार करती हैं। बहुत लंबे समय से मृत व्यक्ति के अंगों का प्रतिरोपण संभव नहीं है क्योंकि मृत्यु के बाद अंग खराब होने लगते हैं। यदि हम इन अस्पतालों के स्वयं–प्रचार को यथावत मानें, वे हमें बताते हैं कि लोगों की एक बड़ी संख्या जो अभी जीवित हैं वह अंगों के स्रोत की तरह आदेश पर है।

चीन में अंग प्रतिरोपण के लिए अंग प्राप्तकर्ताओं का प्रतीक्षा समय किसी दूसरे स्थान से बहुत कम है। 'चीन अंतरराष्ट्रीय प्रतिरोपण सह संस्थान' की बेवसाइट कहती है, ''उपयुक्त (किडनी) का दानकर्ता मिलने में एक ही हफ्ते का समय लगेगा, अधिकतम समय है एक महीना...।'' यह

और भी बताती है, ''यदि अंग के साथ कुछ खराबी निकलती है तो, रोगी के पास विकल्प होगा कि उसे एक ही हफ्ते के अंदर दूसरे दानकर्ता का अंग उपलब्ध कराया जाएगा और चिकित्सा की जाएगी।'' 'ऑरिऐंट अंग प्रात्यारोपण संस्थान' का अप्रैल 2006, के आरंभ में दावा था कि '' (एक उपयुक्त यकृत) के लिए औसत समय है दो हफ्ते।'' चांगजेंग अस्पताल की वेबसाइट का कहना है : ''... सभी रोगियों के लिए यकृत की उपलब्धता का औसत प्रतीक्षा समय एक हफ्ता है।''

इसके विपरीत, कनाडा में 2003 में किडनी के लिए औसत प्रतीक्षा समय 32.5 महीने था और ब्रिटिश कोलंबिया में यह 52.5 महीने से भी अधिक था। निकाले जाने के बाद किडनी का जीवित रहने का समय 24–48 घंटे के बीच है और यकृत के लिए यह 12 घंटे है। चीन में प्रतिरोपण संस्थानों द्वारा रोगियों को इतने कम प्रतीक्षा समय में अंग उपलब्ध करा पाना तभी संभव है जब जीवित किडनी–यकृत ''दानकर्ताओं'' का एक बड़ा वर्ग उपलब्ध हो। बिल्कुल उपयुक्त अंगों के लिए अचंभित कर देने वाले कम समय का प्रचार यही दर्शाता है कि संभावित दानियों का एक बड़ा वर्ग उपलब्ध है।

9) वेबसाइट पर दोषास्पद सूचना

चीन के विभिन्न प्रतिरोपण संस्थानों की वेबसाइट्स पर मार्च 9, 2006 से पहले कुछ सामग्री भी दोषास्पद है। (जब कनाडा और दूसरे देशों के मीडिया में बड़े स्तर पर अंगों के पकड़े जाने के आरोप दोबारा खबरों में आए)। जैसा समझा जा सकता है, इसमें अधिकांश को पहले ही हटाया जा चुका है इसलिए ये टिप्पणियां केवल साइट्स के बारे में जिन्हें अभी भी बचा कर रखे (archieved) संस्थानों पर देखा जा सकता है, जिसमें साइट का स्थान या तो टिप्पणी में दिखाया गया है या फुटनोट में। अचंभित कर देने वाली दोषास्पद सामग्री जून, 2006 के अंतिम हफ्ते तक वेब देखने वालों के लिए उपलब्ध थी हम यहां केवल चार उदाहरणों की सूची दे रहे हैं :

(1) चीन अंतर्राष्ट्रीय प्रत्यारोपण नेटवर्क सहायता सेंटर बेवसाइट
(http://em.zoukiishoku.com/)
(शेनयांग शहर)

मई 17, 2006 की यह अंग्रेजी संस्करण की वेबसाइट (मन्दरिन संस्करण मार्च 9 के बाद गायब कर दिया गया) बताती है कि सेंटर की स्थापना 2003 में चीन चिकित्सा विश्वविद्यालय के प्रथम संयुक्त अस्पताल में की गई। ''... विशेष रूप से विदेशी दोस्तों के लिए। अधिकतर रोगी दुनियाभर से आते हैं।'' साइट के पहला वाक्य दावा करता है कि ''विसेरा (एक शब्दकोश की परिभाषा : आंतरिक नर्म अंग... जैसे मस्तिष्क, फेफड़े, हृदय, आदि'') के दानकर्ता तुरंत उपलब्ध हैं।'' इसी साइट के दूसरे पृष्ठ पर यह वाक्य है : ''... देश भर में किडनी प्रतिरोपण की चिकित्साएं कम से कम 5000 हैं। इतनी अधिक प्रतिरोपण चिकित्साएं चीनी सरकार के सहयोग से हो पा रही हैं। सर्वोच्च जन न्यायालय, सर्वोच्च जन कानून– अफसर,

पुलिस, न्यायपालिका, स्वास्थ्य और सिविल प्रशासनिक सरकार का समर्थन है। यह दुनिया भर में अद्‌भुत है।''

साइट के 'प्रश्न और उत्तर' पृष्ठ पर यह दिया है :

''जीवित किडनी प्रतिरोपण से पहले, हम दानकर्ता की आतंरिक जांच करेंगे... इस प्रकार यह दूसरे देशों से अधिक सुरक्षित है।, जहां अंग जीवित दानी से नहीं होते हैं।''

''प्रश्न : क्या पैनक्रियाज प्रतिरोपण के लिए अंग मस्तिष्क–मृत (मरे हुए) रोगियों से आते हैं?''
''उत्तर : हमारे अंग मस्तिष्क–मृत रोगियों से नहीं आते क्योंकि हो सकता है कि अंग की अवस्था अच्छी न हो।'

(2) ओरियेंट अंग प्रतिरोपण की वेबसाइट
(http://www.ootc.net)
(त्याजिंन शहर)

एक पेज पर हमने पाया (अप्रैल के मध्य में हटा दिया गया – किन्तु बचाये हुए स्थान पर अभी भी देखा जा सकता है) कि यह दावा है : ''जनवरी 2005 में अब तक, हमने 647 यकृत प्रतिरोपण किये हैं – जिनमें से 12 इस हफ्ते में किये गए; औसत प्रतीक्षा समय 2 हफ्ते है।'' एक चार्ट जिसे भी उसी समय हटा दिया गया था (किन्तु बचा कर रखा हुआ उपलब्ध है) दर्शाता हे कि 1998 में बिल्कुल मामूली शुरुआत के साथ (जब यह केवल 9 यकृत प्रतिरोपण कर पाया, से 2005 तक इसने 2248 सफलतापूर्वक कर लिए)।

।।चार्ट।।

इसके विपरीत, कनाडा अंग प्रतिरोपण रजिस्टर के अनुसार, 2004 में पूरे कनाडा में सभी प्रकार के प्रतिरोपण कुल मिला कर हुए 1775 हुए।

(3) जियाओतोंग विश्वविद्यालय के यकृत प्रतिरोपण सेंटर की वेबसाइट
(http://www.firsthospital.cn/hospital/index.qsp)
(शंघाई – यह टेलिफोन द्वारा संपर्क किए सेंटर में से #5 पर है)

अप्रैल 26, 2006, में निकाले एक पेज पर
(http://www.health.sohu.com/20060426/n243015842.shtml), वेबसाइट के अंश में कहना है : ''(यहां) यकृत प्रतिरोपण के केस 2001 में 7 हुए, 2002 में 53, 2003 में 105, 2004 में 144, 2005 में 147, और जनवरी 2006 में 17 केस हो चुके हैं।''

(4) चांगज़ेग अस्पताल के अंग प्रतिरोपण सेंटर की वेबसाइट, जो नं. 2 सैन्य चिकित्सा विश्वविद्यालय से जुड़ा है।

(http://www.transsorgan.com/)
(शंघाई)

एक पेज जिसे मार्च 9, 2006 के बाद हटा दिया गया था। (इंटरनेट से बचा कर रखा पेज उपलब्ध है।) इसमें यह ग्राफ दिखाया गया है जो इस सेंटर द्वारा प्रति वर्ष किए गये यकृत प्रतिरोपण की संख्या को दर्शाता है :

।। चॉट ।।

''यकृत प्रतिरोपण के लिए आवदेन'' फॉर्म में, सबसे ऊपर लिखा है, ''... वर्तमान में, यकृत प्रतिरोपण का चिकित्सा खर्च अस्पताल के खर्च कुल मिलाकर करीब 20,000 युआन ($ 66,667 CND) है, यकृत उपलब्ध कराने का औसत प्रतीक्षा समय हमारे अस्पताल के सभी रोगियों के लिए एक हफ्ता है।

10) अंग प्राप्तकर्ताओं के साक्षात्कार

हमारी रिपोर्ट के पहले संस्करण में, हमारे पास अंग प्रतिरोपण के साक्षात्कार एकत्रित करने का समय नहीं था, जिन लोगों ने विदेश से चीन जा कर प्रतिरोपण कराये। इस संस्करण में, हमने उनके प्राप्तकर्ताओं और उनके परिवार के सदस्यों से विस्तार से साक्षात्कार लिए हैं। उनके अनुभवओं का संक्षिप्त ब्यौरा इस रिपोर्ट के परिविष्ट में संलग्न है।

अंग प्रतिरोपण चिकित्सा, जैसा कि प्राप्तकर्ताओं और उनके संबंधियों ने वर्णन किया है, लगभग पूर्ण गोपनीयता से की जाती थी, जैसे यह कोई अपराध हो जिस पर पर्दा डाला रहा हो। जितनी हो सके उतनी सूचना प्राप्तकर्ताओं और उनके परिवारों से छिपायी जाती है। उन्हें दानकर्ता की पहचान नहीं बताई जाती। उन्हें दानकर्ताओं पर उनके परिवारों की लिखित स्वीकृति कभी नहीं दिखाई जाती। चिकित्सा करने वाले डॉक्टर और कर्मचारियों की पहचान अक्सर नहीं बताई जाती है, भले ही इसके लिए आग्रह किया गया हो। प्राप्तकर्ताओं और उनके परिवारों को चिकित्सा का समय अक्सर उसके होने से कुछ समय पहले ही बताया जाता है। चिकित्सा कई बार मध्य रात्रि में होती है। पूरी प्रक्रिया ''न पूछो, न बताओ'' के आधार पर होती है।

जब लोग इस प्रकार व्यवहार करते हैं जैसे कुछ छिपाना हो, तो यह निष्कर्ष निकालना तार्किक है कि वे कुछ छिपा रहे हैं। क्योंकि मृत्युदण्ड प्राप्त मृत कैदियों से अंग निकालना सर्व विदित है और यहां तक कि चीन की सरकार द्वारा भी स्वीकार किया जाता है, चीनी प्रतिरोपण उसे छिपाने का प्रयास नहीं करेंगे। यह कुछ और होना चाहिये। यह क्या है?

11) इसके द्वारा धन की कमाई

चीन में, अंग प्रतिरोपण एक बहुत ही फायदेमंद व्यापार है। हम धन की श्रृंखला का वहां तक पता लगा सकते हैं जब लोग अंग प्रतिरोपण के लिए विशिष्ट अस्पतालों को धन अदा करते हैं, किन्तु हम उससे आगे नहीं जा सकते। हम यह नहीं जानते कि जो धन अस्पताल प्राप्त करते हैं उसे कौन लेता है। क्या डॉक्टर और नर्स जो अपराधिक अंग प्रतिरोपण में संलिप्त हैं को उनके अपराधों के लिए बड़ी धनराशि दी जाती है? यह वह प्रश्न है जिसका हमारे लिए उत्तर देना कठिन था, क्योंकि हमारे पास पता करने कोई तरीका नहीं था कि धन कहां गया।

चीन अंतर्राष्ट्रीय प्रतिरोपण नेटवर्क सहायता केन्द्र वेबसाइट
(http://en.zoukiishoku.com/)
(शेनयांग शहर)

वेबसाइट से यह जानकारी अप्रैल, 2006 से पहले हटाने से पहले, निम्न मूल्यसूची से प्रतिरोपण से प्राप्त लाभ का आकार पता चलता है :

किडनी US $ 62,000
यकृत US $ 98,000–130,000
यकृत–किडनी US $ 160,000–180,000
किडनी–पेनक्रियाज US $ 150,000
फेफड़ा US $ 150,000–170,000
हृदय US $ 130,000–160,000
कॉर्निया US $ 30,000

किसी भी अपराधिक आरोप की तहकीकात में जहां धन का लेन–देन हुआ हो, मुख्य तरीका धन की श्रृंखला का पीछा करना है। किन्तु चीन में, सभी द्वार बंद होने के कारण धन की श्रृंखला का पीछा करना असंभव है। यह न जान पाना कि धन कहां जाता है कुछ सिद्ध नहीं करता। किन्तु यह कुछ असिद्ध भी नहीं करता, जिसमें ये आरोप भी सम्मिलित हैं।

12) चीन में प्रतिरोपण संबंधी नैतिक मूल्य

चीन के प्रतिरोपण विशेषज्ञ अपने कार्य संबंधी नियमों को छोड़ कर किसी और नैतिक नियमावली से नहीं बंधे हैं। अनेक दूसरे देशों में स्व–संचालित प्रतिरोपण व्यावसाय होते हैं जिनके अपने नियम और कायदे होते हैं। जो प्रतिरोपण विशेषज्ञ किसी नैतिक नियमावली का उल्लंघन करते हैं उन्हें उनके व्यावसाय में उनके सह–कर्मियों द्वारा बिना राज्य के हस्तक्षेप के निकाला जा सकता है।

चीन में प्रतिरोपण विशेषज्ञों के लिए हमें ऐसा कुछ नहीं मिला। जहां तक प्रतिरोपण चिकित्सा का प्रश्न है, जब तक इसमें राज्य का हस्तक्षेप नहीं होता, तब तक सब कुछ चलता है। वहां

कोई निष्पक्ष निरीक्षण संस्था नहीं है जो राज्य से पृथक होकर प्रतिरोपण विशेषज्ञों पर अनुशासन नियंत्रण रख सकें।

चीन में प्रतिरोपण चिकित्सा का जंगल राज दुरूपयोगी कृत्यों को संभव बनाता है। राज्य का हस्तक्षेप और अपराधिक अभियोग अन्ततः व्यावसायिक अनुशासन से कम क्रमबद्ध हैं। क्योंकि अपराधिक अभियोग की सजा व्यावसायिक अनुशासन की सजा से अधिक होती हैं – जिसमें जेल की सजा भी हो सकती है जबकि इसमें केवल किसी को व्यावसाय से निकाला जा सकता है – इसलिए अभियोग के केस अनुशासन के केसों से बहुत कम होते हैं।

प्रतिरोपण विशेषज्ञों के लिए किसी कार्यशील अनुशासन प्रणाली के न होने का यह अर्थ नहीं है कि दुरूपयोगी कृत्य हो रहे हैं। किन्तु यह उनके होने को और संभव बनाता है।

13) प्रतिरोपण के विदेशी नैतिक मूल्य

प्रतिरोपण के विदेशी नैतिक मूल्यों में बहुत अंतर है। कई देशों में जहां से चीन के लिए प्रतिरोपण पर्यटन आरंभ होता है, प्रतिरोपण विशेषज्ञों ने नैतिक और अनुशासनात्मक व्यवस्था बनाई हैं। किन्तु इन व्यवस्थाओं के लिए विशेष रूप से प्रतिरोपण पर्यटन या चीनी प्रतिरोपण विशेषज्ञों से संबंध या मृत कैदियों से अंग निकाल कर प्रतिरोपण से निपटना दुर्लभ है। यहां यह कथन ''न हमने देखा, न सोचा'' चलता प्रतीत होता है। प्रतिरोपण पर्यटन के बारे में, होंगकोंग की चिकित्सा काउंसिल की अनुशासन नियमावली के, विशेष रूप से, दो नियम हैं, जो उल्लेखनीय हैं। एक है कि, ''यदि कोई संदेह हो'' कि दानकर्ता द्वारा मुक्तरूप से और स्वेच्छा से स्वीकृति दी गई है, व्यावसाय का अंगदान से कोई संबंध नहीं होना चाहिये। और, कम से कम जो चीन के बारे में कहा जा सकता है, इस संदर्भ में कि ''लगभग सभी अंग कैदियों से आते हैं, इसलिए सभी केसों में संदेह है कि स्वीकृति मुक्त रूप से या स्वेच्छा से ली गई।''

दूसरा यह है कि चीनी दानकर्ताओं की परिस्थिति के पता लगाने का उत्तरदायित्व विदेशी विशेषज्ञों पर है। विदेशी विशेषज्ञ यदि कोई छान–बीन नहीं करता या केवल सरकारी छान–बीन करता है तो वह नैतिक कार्य नहीं कर रहा है, विदेशी विशेषज्ञ को, छान–बीन के बाद, रोगी को चीन में निर्देशन करने से पहले पूरी तरह संतोष कर लेना चाहिये कि दानकर्ता द्वारा मुक्तरूप से या स्वेच्छा से स्वीकृति दी गई थी।

चीन के अंग प्रतिरोपण बाजार को फलने–फूलने के लिए, आवश्यकता और पूर्ति दोनों की जरूरत है। पूर्ति चीन से आती है, कैदियों से। किन्तु आवश्यकता, अधिकतर बड़े धन के रूप में, विदेश से आती है।

एक परिविष्ट में, हम चीन में प्रतिरोपण संबंध की नैतिकता पर एक समीक्षा विश्लेषण पेश कर रहे है। होंगकोंग सिद्धान्त अपवाद ही हैं न कि नियम। विश्वभर की व्यवसायिक नैतिकता विदेशों में चीन से अंगों की आवश्यकता को रोकने के लिए बहुत कम या कुछ नहीं करती।

16) चीनी प्रतिरोपण कानून

1 जून 2006 तक, चीन में अंगों को बेचने की प्रक्रिया वैध थी। उन्हें बचेना रोकने के लिए कानून उस तारीख से लागू हुआ।

चीन में कानून बनाने और उसे अमल में लाने में बहुत अंतर है। उदाहरण के लिए, चीन में संविधान की प्रस्तावना में एक ''उच्च स्तर'' के लोकतंत्र की प्रतिज्ञा की गई है। किन्तु, त्येननमन चौक नरसंहार ने प्रदर्शित कर दिया कि चीन लोकतांत्रिक नहीं है।

जिससे हम बता सकते हैं, अंग प्रतिरोपण का कानून अभी लागू नहीं हे। बेल्जियम के संसद सदस्य पैट्रिक वैंकरूनकेल्वेन ने, नवंबर 2006 के अंत में, एक किडनी प्रतिरोपण के लिए एक ग्राहक का नाटक करते हुए बीजिंग के दो अस्पतालों को फोन किया। दोनों अस्पतालों ने उन्हें किडनी तुरंत ही 50,000 यूरो में देने की पेशकश की।

जैसा पहले उल्लेख किया गया था, उप मुख्य स्वास्थ्य मंत्री हुआंग जीफू ने नवंबर 2006 में रोष प्रकट किया था कि मृत्युदण्ड प्राप्त मृत कैदियों के अंगों को बेचने का ''चोरी–छिपे व्यापार बंद होना चाहिये।'' किन्तु, यह 1 जुलाई को पहले से अवैध करार हो गया था। उनके भाषण को एक आधिकारिक स्वीकृति मानना चाहिये कि रोक कार्यरत नहीं है।

15) विदेशी प्रतिरोपण कानून

जिस प्रकार के अंग प्रतिरोपण में चीनी चिकित्सा व्यवस्था लिप्त है वह विश्व भर में और स्थानों में अवैध है। किन्तु किसी विदेशी के लिए चीन जाना, वहां प्रतिरोपण का लाभ उठाना जो उनके देश में अवैध है, और घर वापस आना अवैध नहीं है। विदेशी प्रतिरोपण कानून सभी स्थानों पर स्वदेशी तक सीमित है। इसकी परदेश तक पहुंच नहीं है।

कई और कानून अपनी पहुंच में विश्व–व्यापक हैं। उदाहरण के लिए बच्चों के साथ यौन दुराचार करने वाले पर्यटकों पर न केवल उस देश में अभियुक्त बनाया जा सकता है जहां उन्होंने दुराचार किया, बल्कि कई देशों में, वापस स्वदेश में भी। इस प्रकार का कानून प्रतिरोपण पर्यटकों के लिए लागू नहीं है जो अंग प्रतिरोपण के लिए धन देते हैं, यह सुनिश्चित किये बिना कि अंग दानकर्ता की स्वीकृति ली गई थी या नहीं।

कानूनों में कुछ सुधार हो रहे हैं। उदाहरण के लिए, बेल्जियम के संसद सदस्य पैट्रिक वैंकरूनकेल्वेन एक अंतर्देशीय अपराधिक कानून का प्रस्ताव रख रहे हैं जो उन प्रतिरोपण

पर्यटकों को दण्डित करेगा जो विदेशों से अंग खरीदते हैं जहां दानकर्ता कैदी हैं या लापता लोग। किन्तु ये कानून संशोधन के प्रस्ताव अभी आरंभिक स्तर पर हैं।

16) यात्रा सलाह जानकारी

कई देशों में यात्रा सलाह जानकारी होती हैं, जो अपने नागरिकों को एक देश से दूसरे देश यात्रा के खतरों से अवगत कराती हैं। सलाह जानकारी अक्सर राजनीतिक हिंसा, या मौसम संबंधी समस्याओं के बारे में भी चेतावनी देती हैं। किन्तु किसी भी देश ने चीन में अंग प्रतिरोपण के बारे में सलाह जानकारी जारी नहीं की है, जो अपने नागरिकों को सावधान कर सके कि, प्रतिरोपण संस्थान के शब्दों में, चीन में ''लगभग सभी'' अंग कैदियों से आते हैं।

कुछ, और हमें आशा है, अंग प्रतिरोपण के बहुत से प्राप्तकर्ता प्रतिरोपण के लिए चीन जाने में हिचकिचायेंगे यदि उन्हें पता चले कि उनके अंग उन लोगों से आये हैं जो अनिच्छुक कैदी हैं। किन्तु अभी प्राप्तकर्ताओं के लिए सरकार अथवा चिकित्सा व्यवस्था द्वारा, कोई व्यवस्थित सूचना नहीं है जिससे उन्हें चीन में अंगों के स्रोत के बारे में पला चले।

उदाहरण के लिए, चीन के लिए कनाडा की यात्रा सलाह जानकारी जो विदेशी मामलों की वेबसाइट पर उपलब्ध है, व्यापक जानकारी देती है, लगभग 2600 शब्द, जिसमें एक स्वास्थ्य का भी पृष्ठ है। किन्तु अंग प्रतिरोपण का उल्लेख नहीं है।

17) औषधि विज्ञान

अंग प्रतिरोपण चिकित्सा एंटी–रिजेक्शन औधषियों पर निर्भर होती है। चीन इन औषधियों का मुख्य औषधि कंपनियों से आयात करता है।

प्रतिरोपण चिकित्सा में प्रतिरोपण को सफल होने के लिए ऊतक और रक्त दोनों के प्रकार का मिलान होना आवश्यक होता था। प्रतिरोपण के लिए एंटी–रिजेक्शन औषधियों के विकास के बाद से ऊतकों के मिलान की आवश्यकता नहीं रह गई है। एंटी–रिजेक्शन औषधि के भारी प्रयोग द्वारा यह संभव है कि, एक दानकर्ता से प्राप्तकर्ता को प्रतिरोपण कर दिया जाये जिनके ऊतक नहीं मिलते हैं। केवल रक्त के प्रकार का मिलान आवश्यक है। ऊतक मिलान लाभकारी है, जिससे एंटी–रिजेक्शन औषधियों पर भारी निर्भरता कम हो सके, किन्तु आवश्यक नहीं है। चीनी चिकित्सा व्यवस्था भारी रूप से एंटी–रिजेक्शन औषधियों पर निर्भर करती है।

अंतर्राष्ट्रीय औषधि कंपनियां चीनी प्रतिरोपण व्यवस्था के बारे में वैसा ही व्यवहार रखती हैं जैसा और सब। वे कोई प्रश्न नहीं पूछतीं। उन्हें कोई जानकारी नहीं है कि उनकी औषधि उन प्राप्तकर्ताओं के लिए प्रयोग हो रही है उन्होंने अंग स्वैच्छिक दानकर्ता से प्राप्त किये हैं या नहीं।

कई देशों में निर्यात नियंत्रक कानून होते हैं, जिसमें कुछ उत्पादकों से निर्यात की मनाही होती है और कुछ उत्पादकों के निर्यात के लिए राज्य की स्वीकृति आवश्यक होती है। किन्तु किसी भी देश ने हमारी जानकारी में, चीन को अंग प्रतिरोपण रोगियों के लिए एंटी–रिजेक्शन औषधियों के निर्यात पर पाबंदी नहीं लगाई है।

उदाहरण के लिए, कनाडा का आयात और निर्यात परमिट एक्ट में प्रावधान है :
''कोई भी व्यक्ति किसी ऐसी वस्तु का निर्यात नहीं करेगा या इससे लिए प्रयास करेगा जो निर्यात नियंत्रक कानून में दर्ज हो या क्षेत्र नियंत्रक सूची में दर्ज हो। यह केवल इस एक्ट के तहत निर्यात परमिट जारी करने पर ही किया जा सकता है।''

किन्तु प्रतिरोपण के लिए एंटी–रिजेक्शन औषधियां चीन के लिए क्षेत्र नियंत्रक सूची में सम्मिलित नहीं हैं।

18) देखभाल के लिए विदेशों से सरकारी अनुदान

कुछ सरकार द्वारा संचालित स्वास्थ्य प्लान स्वास्थ्य की देख–रेख के लिए विदेशों में भी भुगतान करते हैं जो उसी धन के बराबर है जो स्वदेश में देख–रेख के लिए खर्च होता। जहां यह होता है, हमारी जानकारी में, किसी भी देश में ऐसा प्रतिबंध नहीं है जहां रोगी चीन में अंग प्रतिरोपण कराता हो।

प्रतिरोपण पर्यटकों को अपने देश में भी देख–रेख की आवश्यकता होती है। उन्हें सलाह और एंटी–रिजेक्शन औषधियों की आवश्यकता पड़ती रहती है। जिन देशों में स्वास्थ्य सेवाओं के लिए सरकारी अनुदान रहता है वहां इस प्रकार की देख–रेख के लिए भी अनुदान होता है।

यहां भी, अनुदान देने वालों को कोई अंतर नहीं पड़ता कि अंग प्राप्तकर्ता ने अंग किस प्रकार प्राप्त किये। यह तथ्य कि अंग चीन से किसी अनिच्छुक कैदी से आये हैं जिसकी अंग के लिए हत्या कर दी गई, और देख–रेख के लिए सरकारी अनुदान बिल्कुल अनुचित है।

c) फालुन गोंग संबंधित विचार

19) खतरे की आशंका

चीनी जेलों में अधिकांश धर्म–संबंधी कैदी फालुन गोंग से हैं। चीनी जेलों में अनुमानित दो तिहाई यातना भोगी कैदी फालुन गोंग से हें। चीनी शासन जिस प्रकार की तीव्रतम भाषा का फालुन गोंग के विरूद्ध प्रयोग करता है उसका कोई सानी नहीं है, इसके लिए चीन की उतनी भर्त्सना नहीं हुई जितनी अपेक्षाकृत किसी और देश की हो सकती है। जिसने निरंकुश हत्या

और गुमशुदगी के वार्षिक मामले फालुन गोंगे के हैं वे सभी दूसरे सताये हुये समुदायों से अधिक हैं।

चीनी सरकार इस समुदाय को इतनी बूरी तरह प्रताड़ित और दमन क्यों करती है, जो किसी भी दूसरे समुदाय से अधिक है? चीनियों की इसके बारे में जो नियमित टिप्पणी है यह है कि फालुन गोंग एक दुष्ट समुदाय है।

फालुन गोंग के एक बुरा समुदाय होने के कोई लक्षण नहीं हैं। इसमें कोई सदस्यता नहीं होती, न कोई कार्यालय और न कोई पदाधिकारी।

डेविल ओनबी, जो मॉन्ट्रियल विश्वविद्यालय में पूर्वी एशिया अध्ययन के निदेशक हैं और आधुनिक चीनी इतिहास के एक विशेषज्ञ हैं, ने फालुन गोंग के बारे में छः वर्ष पहले कनाडा अंतरराष्ट्रीय संस्थान के लिए एक दस्तावेज लिखा था। उन्होंने लिखा था कि किसी बुरे समुदाय की तरह न होते हुए, फालुन गोंग में कोई अनिवार्य धन की बाध्यता नहीं है, न ही अभ्यासियों को समाज में अलग–थलग रखा जाता है और न ही दुनियाभर में मुंह मोड़ा जाता है। वे कहते हैं :
''कानून गोंग के लोग समुदाय में रहते हैं। उनमें से अधिकांश, वे परिवारों के साथ रहते हैं। वे कार्य पर जाते हैं; वे अपने बच्चों को स्कूल भेजते हैं।''

फालुन गोंग को छोड़ने की कोई पेनल्टी नहीं है, क्योंकि छोड़ने के लिए कुछ है ही नहीं। अभ्यासी फालुन गोंग का उतना कम या उतना अधिक अभ्यास कर सकते हैं जितना वे चाहें। वे किसी भी समय आरंभ कर सकते हैं या रूक सकते हैं। वे व्यायाम और लोगों के साथ कर सकते हैं या एकांत में।

ली होंगजी, जो पुस्तकों के लेखक हैं जिनसे फालुन गोंग अभ्यासी प्रेरणा लेते हैं, उनकी अभ्यिासियों द्वारा उपासना नहीं की जाती। न ही वे अभ्यासियों से धन ग्रहण करते हैं। वे एक एकांतवासी व्यक्ति हैं जो अभ्यासियों से कभी–कभार ही मिलते हैं। उनके अभ्यासियों दिये कथन सार्वजनिक रूप से– सम्मेलनों के व्याख्यान और पुस्तकों रूप में हैं।

चीनी सरकार का फालुन गोंग को एक दुष्ट समुदाय कहना फालुन गोंग को प्रताड़ित करने का एक हिस्सा है, जो दोषी ठहरा कर दमन करने का एक बहाना है, जिससे फालुन गोंग के विरूद्ध घृणा पैदा हो सके, उसे अलग–थलग किया जा सके और अपमानित किया जा सके। किन्तु इस लेबल को लगा देने से यह स्पष्ट नहीं होता कि वह दमन क्यों आरंभ हुआ। ''दुष्ट समुदाय'' का लेबल दमन के लिए पैदा किया एक जरिया है, किन्तु इसका कारण नहीं। इसका कारण कहीं और है।

समता लाने के लिए, 1949 में चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी के कब्जा कर लेने के बाद सभी चीनी व्यायाम पद्धतियों या सभी प्रकार के चीगोंग को दबाया गया। 1990 तक, पुलिस प्रशासन सभी प्रकार के चीगोंग, जिसमें फालुन गोंग भी शामिल है, के लिए कम कठोर हो गया था।

फालुन गोंग में कन्फ्यूशन, बुद्धमत और ताओमत के सिद्धांत सम्मिलित हैं। मूल रूप से, यह शारीरिक और अध्यात्मिक स्वास्थ्य को बढ़ाने के लिए व्यायाम और ध्यान की पद्धतियां सिखाता है। इस अभियान का कोई राजनीतिक मंच नहीं है; इसके अनुयायी सभी वर्गों, देशों और प्रांतों के लोगों के बीच करूणा और सहनशीलता का प्रचार करते हैं। अहिंसा का घोर विरोध किया जाता है।

ली ने अपनी पद्धति को सरकार के चीगोंग अनुसंधान संस्थान में रजिस्टर करवाया था। एक समय पर जब अभियान पर सरकारी नाराजगी थी किन्तु इस पर प्रतिबंध नहीं लगा था, 1998 के आरंभ में, ली अमेरीका चले गये। किन्तु फालुन गोंग प्रसिद्ध होता रहा। जियांग सरकार ने 1999 में अनुमान लगाया कि इसके 7 करोड़ अनुयायी हैं। इस वर्ष, चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी की सदस्यता अनुमानित 6 करोड़ थी।

फालुन गोंग के जुलाई 1999, में प्रतिबंधित होने से पहले, इसके अनुयायी पूरे चीन में नियमित रूप से मिल कर व्यायाम किया करते थे। केवल बीजिंग में ही 2000 से अधिक व्यायाम स्थल थे।

कम्युनिस्ट पार्टी ने, अप्रैल 1999 में, युवाओं के लिए विज्ञान और तकनीक की पुस्तिका में एक लेख छपवाया, जिसमें फालुन गोंग को एक अंधविश्वास और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक कहा गया क्योंकि कहा गया कि अभ्यासी गंभीर रोगों में नियमित इलाज नहीं कराते। बड़ी संख्या में फालुन गोंग अनुयायियों ने इस लेख के विरूद्ध तियांजिन में संपादक कार्यालय के बाहर विरोध दर्ज किया। परिणामस्वरूप पुलिस ने मार–पिटाई की और कुछ को गिरफ्तार किया।

इन गिरफ्तारियों के बारे में याचिका के लिए सरकारी याचिका कार्यालय में, 25 अप्रैल, 1999 में 10,000–15,000 फालुन गोंग अभ्यासी एकत्रित हुए जो सुबह से देर रात तक बीजिंग के निषेध शहर के पास, जोंगनानहाइ में कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रमुख कार्यालय बाहर खड़े रहे। सभी लोग शांत थे और बिना पोस्टर लिए हुए थे। जियांग इन अभ्यासियों की उपस्थिति में घबरा गये। उनके अनुसार कम्युनिस्ट पार्टी की धारणात्मक प्रमुखता खतरे में थी।

20) दमन की नीति

यदि फालुन गोंग अभ्यासियों के अंगों से प्रतिरोपण चीन भर में हो रहे हैं, तो आशा की जाती है कि इस बारे में कुछ सरकारी नीतिगत निर्देश भी होंगे। किन्तु, चीन में नीतियों के बारे में गोपनीयता के कारण हम पता लगाने में असमर्थ रहे कि इस प्रकार किसी नीति का अस्तित्व है या नहीं।

तब भी, हम जानते हैं कि फालुन गोंग के दमन की शासकीय नीति है। चीन की सरकार और चीन की कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा कुछ बहुत तीव्र वक्तव्य हैं, जो इस रिपोर्ट के साथ परिशिष्ट में संलग्न हैं, जिसमें फालुन गोंग के दमन की बात की गई है, जिसमें शारीरिक दमन भी सम्मिलित है।

चीनी सरकार ने फालुन गोंग के दमन को कार्यान्वित करने के लिए एक विशिष्ट नौकरशाही की स्थापना की। इस विशिष्ट विभाग के चीन भर में प्रतिनिधि हैं। क्योंकि इसकी स्थापना 1999 के छठवें महीने के दसवें दिन को हुई थी, इसे संक्षेप में 610 कार्यालय कहा जाता है।

610 कार्याकाल के प्रतिनिधि चीन के सभी प्रान्तों, शहरों, जिलों, विश्वविद्यालयों सरकारी विभागों और सरकारी उपमों से फैले हैं।

ली बाइगेन के अनुसार, जो इस समय बीजिंग के नगरपालिका योजना कार्यालय के निदेशक थे जो सभा में उपस्थित थे, 1999 के दौरान 610 कार्यालय के तीन प्रमुखों 3000 से अधिक अफसरों को राजधानी के महान जनसमग्रह में फालुन गोंग के विरूद्ध अभियान के बारे में विचार–विमर्श के लिए बुलाया, जो अच्छी प्रकार नहीं चल रहा थ। त्येनमन चौक पर प्रदर्शन लगातार हो रहे थे। 610 कार्यालय के प्रमुख, ली लानचिंग ने अभियान के बारे में सरकार की नई नीति की घोषणा कीः उनकी मान–मर्यादा धूमिल कर दो, उन्हें धन से दीवालिया कर दो और शारीरिक रूप से बर्बाद कर दो।'' केवल इस सभा के बाद से अनुयायियों की पुलिस के हाथों मृत्यु को आत्महत्या दर्ज किया जाने लगा।

21) घृणा को बढ़ावा देना

चीन में फालुन गोंग का कथनी और करनी दोनों से घोर अपमान किया जाता है। नीति निर्देशों के साथ–साथ जन–साधारण को भड़काया जाता है जिससे दमन की नीति औचित्यपूर्ण लगे, इससे और लोगों को शमिल किया जा सके, और विरोध को रोका जा सके। एक समुदाय विशेष के लिए इस प्रकार की भाषा का प्रयोग उस समुदाय के विरूद्ध घोर मानवीय उल्लघंन का पूर्वसूचक और प्रमाणक–चिन्ह दोनों बन गया।

एमनेस्टी इंटरनेशनल के अनुसार, चीनी सरकार ने फालुन गोंग को रौंदने के लिए तीन रणनीतियों का प्रयोग कियाः उन अभ्यार्थियों के खिलाफ हिंसा का प्रयोग जो अपना विश्वास छोड़ने से मना करते हैं, सभी पता किये हुए अभ्यासियों का फालुन गोंग छोड़ने और विश्वास त्यागने के लिए ''ब्रेनवाश'' करना, और जन–साधारण से फालुन गोंग के विरूद्ध करने के लिए मीडिया अभियान। फालुन गोंग का दमन करने के बीजिंग के आदेशों को कार्यन्वित करने के लिए प्रान्तीय सरकारों को अधिकृत कर दिया गया। कार्यान्वित करने का अर्थ, कुछ मायनों में, यह भी था कि चीनी जनता के सामने नाटक करना कि अभ्यासी स्वयं को जलाकर आत्महत्या करते हैं, अपने परिवार के सदस्यों की हत्या करते हैं और हाथ–पैर काट देते है तथा रोग उपचार के लिए मना करते हैं। समय बीतने पर इस प्रकार का वांछनीय प्रभाव रहा और, सभी नहीं तो बहुत से लोग कम्यूनिस्ट पार्टी के फालुन गोंग के बारे में विचार स्वीकार करने लगे।

तब राष्ट्रीय जन परिषद ने कानून पारित किये जिनका आशय फालुन गोंग अभ्यासियों के विरूद्ध किये गये अवैध कृत्यों को वैध बनाना था।

घृणा को इस प्रकार बढ़ावा देना चीन में बहुत उग्र है। किन्तु यह विश्वभर में होता है। चीनी अपफसर, जहां कहीं भी वे नियुक्त होते हैं, वे इस प्रकार के उकसाने वाले कृत्यों को सरकारी कर्तव्य की तरह करते हैं। एडमोटंन, एल्र्बेटा, कनाडा में दो चीनी राजनयिक अफसरों का जानबूझकर फालुन गोंग के विरूद्ध घृणा भड़काने का व्यवहार पुलिस द्वारा इनके ऊपर अभियोग का मामला बन गया। पुलिस की रिपोर्ट इस रिपोर्ट के साथ प्रदर्शित है।

घृणा को बढ़ावा देना दमन के प्रकार को विशिष्ट रूप से नहीं दिखाता। किन्तु यह कोई भी और सभी प्रकार के क्रूरतम उल्लघंनों को बढ़ावा देता है। इस प्रकार के घुणा के प्रचार के अभाव में जो आरोप हमने सुने हैं उनका सत्य होना कठिन जान पड़ता। एक बार इस प्रकार के घृणा को बढ़ावा देना आरंभ हो जाता है, यह तथ्य के लोग फालुन गोंग के विरूद्ध इस प्रकार के व्यवहार में स्थित होंगे–का अस्वीकार्य होना समाप्त हो जाता है।

22) शारीरिक दमन

पूर्व राष्ट्रपति जियांग का 610 कार्यालय को आदेश या फालुन गोंग को ''मिटा डालना''। एक परिशिष्ट दमन द्वारा मिटा डालने के इस प्रयत्न को विस्तार में बताता है।

अत्याचार मामलों के यू. एन. के विशेष रिपोटकर्ता ने टिप्पणी की किः

''सन 2000 से, विशेष रिर्पोटकर्ता और उनके पूर्वाधिकारियों ने अत्याचार के आरोपों के 314 मामले चीन की सरकार को अवगत कराये हैं। ये मामले 1160 से अधिक लोगों के केस प्रदर्शित करते हैं।'' और ''इस संख्या के अतिरिक्त, इस पर ध्यान दिया जाए कि 2003 में भेजा गया एक मामला (E/CN.4/2003/68/Add.1Para.301) हजारों फालुन गोंग अभ्यासियों के साथ र्दव्यवहार और अत्याचार को विस्तार में बताता है।''

इसके अतिरिक्त, रिर्पोट बताती है कि चीन में अत्याचार और दुर्व्यवहार के 66 प्रतिशत पीड़ित फालुन गोंग अभ्यासी थे, जबकि बाकी पीड़ित व्यक्ति थे उइघर (11 प्रतिशत), यौनकर्मी (8 प्रतिशत), तिब्बती (4 प्रतिशत), मानवाधिकार कार्यकर्ता (5 प्रतिशत), राजनीतिक विरोधी (2 प्रतिशत), और दूसरे (HIV/AIDS से रोगग्रस्त लोग और धार्मिक समुदायों के लोग–2 प्रतिशत)।

वाशिंगटन पोस्ट के बीजिंग ब्यूरों के समाचार लेख पूरे को वर्ष बाद (5 अगस्त 2001) को 610 कार्यालय और प्रशासन के दूसरे एजेंटों के फालुन गोंग अभ्यासियों के खिलाफ क्रूर तरीकों को बयान करता हैः

''पश्चिम बीजिंग के एक पुलिस थाने में, ओयांग मैं ''हां'' नहीं कहता, तो वे मुझे बिजली के डण्डे से करंट मारते' उसने कहा। तब इसे बीजिंग के पश्चिमी उपप्रान्त के एक यातना ग्रह में भेज दिया गया। वहां, पहरेदारों ने उसे एक दीवार की और मुंह करके खड़ा होने का आदेश दिया। यदि वह हिलता, वे उसे करंट मारते। यदि वह थकान से गिर जाता, वे उसे करंट मारते...।''

''(बाद में) उसे फालुन गोंग कैदियों के सामने ले जाया गया और उसे बिडियो कैमरे के सामने दल को अस्वीकृत करने के लिए बाध्य किया गया। ओयांग को जेल से छूटने के बाद ब्रेनवाशिंग कक्षा में ले जाया गया। बीच दिन तक 16 घंटे रोज फालुन गोंग'' पर वाद–विवाद

करने के बाद वह ''उर्तीण'' हुआ। ''मेरे ऊपर अविश्वस्नीय दबाव था और अब भी हैं, उसने कहा। 'पिछले दो वर्षों में, मैंने वह देखा जो मनुष्य सबसे बुरा कर सकता है। हम वास्तव में पृथ्वी पर सबसे गिरे हुए पशु हैं।'''

औनबी ने टिप्पणी की है कि मानवाधिकार संस्थाओं ने–

''एक स्वर में चीन की फालुन गोंग के विरूद्ध क्रूर अभियान पर र्भत्सना की है, और विश्वभर में अनेक सरकारों ने, जिसमें कनाडा की भी है, ने अपनी चिंता व्यक्त की है।''

उन्होंने एमनेस्टी इंटरनेशनल की सन 2000 की रिपोर्ट का हवाला दिया जिसमें उल्लेख है कि जबसे जुलाई 1999 से दमन आरंभ हुआ है, 77 फालुन गोंग ''अभ्यासियों की कैद में या ठीक छूटने के बाद, रहस्यमय परिस्थितयों में मृत्यु हो गई।''

23) भारी संख्या में गिरफ्तारियां

अभ्यासियों की भारी संख्या में गिरफ्तारियां एक प्रकार का शारीरिक अत्याचार है जिस पर अलग से ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि इसका संबंध अंग प्रत्यारोपण से हो सकता है। किसी भी व्यक्ति जिसके अंग उसकी इच्छा के बिना निकाले जाते हैं को पहले कैद करना आवश्यक है।

फालुन गोंग के दमन में, 1999 की गर्मियों के आरंभ में, इसके हजारों अभ्यासियों को कैदखानों और यातना ग्रहों में भेजना शामिल था। यू. एस. राज्य विभाग की चीन के बारे में 2005 की रिर्पोट के अनुसार, उदाहरण के लिए बताती है कि इसकी पुलिस सैकड़ों कैदखाने चलाती है, जिनमें से 340 पुर्न शिक्षा व यातनागृहों की क्षमता 300,000 लोगों को रखने की है। रिर्पोट में यह भी जिक्र है कि फालुन गोंग अभ्यासी जिनकी कैद में मृत्यु हो गई, की संख्या कुछ सौ से कुछ हजार तक अनुमानित है।''

हजारों–हजार फालुन गोंग अभ्यासी, दल की वैधता की मांग के लिए बीजिंग यात्रा करके आते और धरना देते या बैनर फहराते। लोग लगभग रोज आते थे। लेखक जेनिफर जेंग, जो पहले बीजिंग में थीं और अब आस्ट्रेलिया में रहती हैं, हमें बताती हैं कि अप्रैल 2001 के अंत तक बीजिंग में लगभग 830,000 फालुन गोंग अनुयायियों की गिरफ्तारी की गई जिनकी पहचान की जा सकी। ऐसे अभ्यासियों की कोई संस्था उपलब्ध नहीं है जिन्हें कैद किया किन्तु उन्होंने अपनी जानकारी देने से इंकार कर दिया। छूटे हुए फालुन गोंग अभ्यासियों से किये साक्षातकार द्वारा हम जानते हैं कि अपनी जानकारी न देने वालों की संख्या बहुत बड़ी है। किन्तु हम यह नहीं जानते कि कितनी बड़ी।

फालुन गोंग अभ्यासियों की बड़ी संख्या में मनमाने रूप से अनिश्चितकालीन गुप्त कैद स्वयं में आरोपो को सिद्ध नहीं करती। किन्तु इसके विपरित, कैदियों के एक समूह के अभाव में, आरोप कमजोर हो जाते। एक बहुत बड़ी संस्था में लोगों का समूह जो राज्य के मनमानेयन और शक्ति के अधीन था, जिन्हें किसी भी प्रकार के अधिकारों का संरक्षण नहीं था, अंग प्रत्यारोपण के लिए अनिच्छुक लोगों का संभावित स्रोत बन जाता है।

24) मृत्यु

दिसंबर 22, 2006 तक, हमने पता किया है कि 3006 फालनु गोंग अभ्यासियों की दमन के कारण मृत्यु हो चुकी है। इन पीड़ितों को छः समूहों में विभाजित किया जा सकता है। एक

समूह उन लोगों का है जिनकी अधिकारियों की लगातार परेशानियों और धतकियों के कारण मानसिक दबाव के कारण मृत्यु हो गइ। दूसरे वे लोग हैं जिनके साथ कैदगृहों में दुर्व्यवहार किया गया और उसके बाद उन्हें उनके परिवारों को जिंदा सौंप दिया गया, किन्तु उनकी बाद में दुर्व्यवहार के कारण मृत्यु हो गई और अधिकारियों द्वारा उनके शरीर परिवारों को क्रिया–क्रम के लिए दे दिये गए। चौथे वे पीड़ित हैं जिनकी कैद में दुर्व्यवहार के कारण मृत्यु हो गई और उनका तभी कर दिया गया जब वे कैद में थे, किन्तु उनके परिवारों ने मृत्यु और शवदाह के बीच उनके शरीरों को देखा था। पांचवें वे है जिनकी मृत्यु और शवदाह तभी कर दिया गया जब वे कैद में थे और उनके परिवारों ने शरीरों को कमी नहीं देखा। छठे वे पीड़ित हैं जिनकी कैद में मृत्यु हो गई किन्तु हमारे पास पूरी जानकारी नहीं है कि उनके परिवारों ने शवदाह से पहले उनके शरीरों को देखा या नहीं।

अंग प्रत्यारोपण के संभावित फालुन गोंग पीड़ितों में से अधिकांश, जहां तक हम बता सकते हैं, वे हैं जिनके परिवारों को उनके प्रियजनों की मृत्यु की सूचना नहीं दी गई। सूचना न देने के दो कारण थे। एक यह था कि अभ्यासियों ने अधिकारियों को अपनी पहचान बताने से इंकार कर दिया। दूसरी यह थी कि अधिकारियों ने यद्यपि वे जानते थे कि अभ्यासी कौन हैं, उनके परिवारों को उनकह कैद के बारे में नहीं बताया, और न ही जन कैदियों को, मृत्यु से पहले, अपने परिवारों से संपर्क करने की अनुमति दी गई।

हालांकि, हम पांचवे और छठे समूह के पहचाने हुए मृत लोगों के अंग प्रत्यारोपण में पीड़ित होने की संभावना से इंकार नहीं कर सकते। इन लोगों की संख्या 300 है। पांचवां समूह विशेष रूप से संदेह पैदा करता है। उनके नाम एक परिशिष्ट ने दिये हैं।

अधिकारियों के अत्याचार द्वारा बड़ी संख्या में मारे गये अभ्यासी आरोपों की पुष्टी करते हैं जिनकी हम जांच कर रहे हैं। जब फालगुन गोंग अभ्यासियों का जीवन इतना सस्ता है, तब मृत्यु के एक कारण को खारिज करने की कोई वजह नहीं रह जाती। यदि कोई चीन की सरकार बड़ी संख्या में अत्याचार द्वारा फालुन गोंग अभ्यासियों की हत्या की सकती है, तब यह विश्वास करना कठिन नहीं होगा वे ऐसा अंग प्रत्यारोपण के द्वारा कर सकती है।

25) बेनाम लोग

फालुन गोंग अभ्यासियों की कैद, हांलाकि एक प्रकार से चीनी दमन का एक नियमित तरीका है जिसमें फालुन गोंग एक दुर्भाग्यपूर्ण निशाना है, इसका एक विचित्र लक्षण है। फालुन गोंग अभ्यासी जो पूरे देश से बीजिंग में त्येननमन चौक पर अपील या विरोध प्रकट करने गए उन्हें व्यवस्थित तरीके से गिरफ्तार कर लिया गया। जिन लोगों ने अपनी पहचान अधिकारियों को बता दी, उन्हें वापस उनके प्रान्तों में भेज दिया जाता था। उनके परिवारों को उनके फालुन गोंग क्रियाकलापों में फंसा दिया जाता और उन्हें अभ्यासी पर फालुन गोंग छोड़ने का दबाव बनाने के लिए बाध्य किया जाता। उनके कार्यस्थल के अधिकारी, उनके सहकर्मी उनके स्थानीय सरकार के नेताओं को इस बात के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता और दण्डित किया जाता कि वे लोग वीजिंग से अपील या विरोध प्रकट करने पर।

अपने परिवारों की सुरक्षा के लिए और स्थानीय लोगों की दुश्मनी से बचने के लिए, अनेक कैदी लोगों ने अपनी पहचान बताने से इंकार कर दिया। परिणामस्वरूप फालुन गोंग कैदियों

की एक बड़ी संख्या खड़ी हो गई जिनकी पहचान अधिकारियों के पास नहीं थी। न ही, वे लोग जो उन्हें जानते थे, को पता था कि वे कहां हैं।

हालांकि यह अपनी पहचान न बताना सुरक्षा के कारण किया गया था, इसका विपरीत परिणाम भी हो सकता था। ऐसे व्यक्ति को शिकार बनाना सरल जिसका आता–पता उसके परिजनों को नहीं पता हो न कि ऐसे जिसके बारे में उसके परिजन जानते हों। ये लोग चीनी नजरिये से भी बहुत असुरक्षित लोगों का समूह है।

जिन लोगों ने अपनी पहचान बताने से मना कर दिया था उनके साथ विशेष रूप से बुरा व्यवहार किया गया। साथ ही, उन्हें चीनी कैद व्यवस्था में घुमाया जाता रहा जिसका कारण कैदियों को नहीं बताया गया।

क्या यह वह जनसंख्या भी थी जो फालुन गोंग अंग प्रत्यारोपण का स्रोत बन गई? स्पष्ट रूप से, केवल इस जनसंख्या की मौजूदगी हमें नहीं बताती कि यह इस प्रकार है। किन्तु, इस जनसंख्या की मौजूदगी प्रत्यारोपण अंगों के स्रोत का खुलासा करती है, यदि आरोप सत्य हैं तो। कैद व्यवस्था के बाहर बिना किसी की जानकारी के इस जनसंख्या के सदस्य अचानक लापता हो जाते हैं।

लेखकों के लिए, इस रिपोर्ट को बनाने के लिए जांच के दौरान कई झकझोर देने वाले पल आए। सबसे विचलित करने वालों में से एक था जेलों/कैदखानों/लेबर कैंप में बेनाम लोगों की यह जनसंख्या। एक के बाद एक जो अभ्यासी कैदखानों से अन्ततः बाहर आए उन्होंने हमें इस जनसंख्या के बारे में बताया। उनके वक्तव्यों को एक परिशिष्ट में संलग्न किया गया है।

जो इन अभ्यासियों ने हमें बताया वह था कि कैद में वे स्वयं बेनाम लोगों से मिले थे, जो एक बड़ी संख्या में थे। हालांकि हम चीनी कैद से छूट अनेक फालुन गोंग अभ्यासियों से मिले हैं, हमें अभी उन लोगों से मिलना या सुनना है, बड़ी संख्या में होने के बावजूद, जो कैद से छूटे हों और उन्होंने शुरू से अन्त तक कैद के दौरान अपनी पहचान नहीं बताई। हम अभ्यासियों के साथ क्या हुआ? वे कहां हैं?

जबरन लापता हो जाने की समस्या बेनाम लोगों की समस्या से भिन्न है, क्योंकि, जबरन लापता होने के मामले में, परिवारों को पता होता है कि राज्य का हस्तक्षेप है। बेनामों के लिए, परिवार वाले केवल यह जानते हैं कि उन्हें अपने प्रियजनों की कोई खबर नहीं है। जबन लापता हो जाने वाले पीड़ितों के मामले में, परिवारजन और गवाह अधिक जानते हैं। राज्य या तो स्वीकार करने से मना कर देता है कि व्यक्ति कभी उनकी कैद में था या व्यक्ति की स्थिति या स्थान की जानकारी छिपाता है[36]।

ऐसे कुछ फालुन गोंग अभ्यासी हैं जो लापता हो गए हैं, जिन्हें प्रशासन ने अगवा कर लिया। हालांकि, जो लापता होने के मामले हम जानते हैं वे केवल उन लोगों के हैं जिन्हें बाद में छोड़ दिया गया और उन्होंने अपने लापता होने के बारे में बताया। हम यह तथ्य कि ये लोग लापता कर दिये गए तभी जानें, जब वे दोबारा प्रकट हुए। ऐसा संभव है कि ऐसे दूसरे अभ्यासी हैं जिन्हें कभी नहीं छोड़ा गया।

बेनामल ोगों के लिए, क्योंकि उनके परिवार वालें नहीं जानते कि वे कहां हैं, यह आवश्यक नहीं कि वे प्रशासन से पूछें कि वे कैद में हैं। जब एक ऐसी पद्धति को अभ्यास करने वाला व्यक्ति जिसका राज्य द्वारा क्रूरता से दमन किया जा रहा हो लापता हो जाता है, तब परिवार वालों की मानसिकता सरकार से अधिक पूछ–ताछ की नहीं होती। तब भी, कुछ लोगों ने

सरकार से लापता फालुन गोंग अभ्यासी परिजन को खोजने के लिए मदद की गुहार की है। उनमें से कुछ मामले इस रिपोर्ट के परिशिष्ट में संलग्न हैं।

26. रक्त की जांच और अंगों का परीक्षण

कैद में फालुन गों अभ्यासियों की व्यवस्थित रूप से रक्त की जांच और अंगों का परीक्षण किया जाता है। दूसरे कैदी, जो अभ्यासी नहीं हैं और साथ में बैठे हैं, की जांच नहीं की जाती। यह भेदभावपूर्ण जांच लेबर कैंप, जेलों और कैदखानों में की जाती है। हमने इसके बारे में इतनी बड़ी संख्या में साक्ष्य मिले हैं कि इसमें कोई संदेह नहीं कि भेदभावपूर्ण जांच होती है। ये जांच और परीक्षण किये जाते हैं भले ही अभ्यासियों को लेबर कैंप, जेलों या कैदगृहों में रखा गया हो। सबूत के लिए साक्षातकार जिनमें कहा गया कि दूसरे कैदियों को छोड़ कर फालुन गोंग अभ्यासियों की सक्त जांच और अंगों का परीक्षण किया जाता था, इस रिपोर्ट के साथ परिशिष्ट में संलग्न है।

अभ्यासियों को स्वयं जांच और परीक्षण का कारण नहीं बताया जाता। जांच और परीक्षण स्वास्थ्य कारणों से किये गए यह असंभावित जान पड़ता है। पहला यह, केवल स्वास्थ्य बचाव के लिए लोगों को व्यवस्थित रूप से रक्त जांच और अंग परीक्षण अनावश्यक है। दूसरा, कैद में फालुन गोंग अभ्यासियों के स्वास्थ्य के साथ और भी अनेक रूपों में खिलवाड़ किया जाता है, यह असंभावित है कि प्रशासन फालुन गोंग अभ्यासियों की रक्त जांच और अंग परीक्षण स्वास्थ्य बचाव के कारण से करेगा।

रक्त परीक्षण अंग प्रत्यारोपण की एक पूर्व–आवश्यकता है। दानकर्ताओं को प्राप्त कर्ताओं के साथ मिलान की आवश्यकता होती है जिससे प्राप्तकर्ताओं की एंटी–बॉडी अंगों को अस्वीकृत न कर दें।

केवल यह तथ्य कि रक्त की जांच और अंगों का परीक्षण होता है यह सिद्ध नहीं करते कि फालुन गोंग अभ्यासियों से अंग प्रत्यारोपण हो रहे हैं। किन्तु इसका विपरीत सत्य है। यदि कोई रक्त परीक्षण नहीं किया जाता, आरोप असिद्ध हो जाते। कैद में फालुन गोंग अभ्यासियों की बड़े पैमाने पर रक्त जांच और अंग परीक्षण असिद्ध होने के कारण मार्ग को भी समाप्त कर देता है।

27. पूर्व में किये प्रत्यारोपणों का स्रोत

चीन में होने वाले अंग प्रत्यारोपण की संख्या विशल है, जो चाइना डेली के अनुसार 2005 में 20,000 थी। चीन में विश्व में सबसे अधिक संख्या में चिकित्सा की जाती है, जो केवल अमेरीका से कुछ कम हैं।

बड़ी संख्या और साथ में कम प्रतीक्षा समय का अर्थ है किसी भी समय पर बड़ी संख्या में संभावित दानकर्ता उपलब्ध होने चाहिए। यह दानकर्ताओं की जनसंख्या कहां से आई और कौन है?

जिनते परिचित स्रोत हैं प्रत्यारोपण उनकसे कहीं अधिक हैं। हम जानते हैं कि कुछ अंग मृत्युदण्ड प्राप्त कैदियों से उनकी मृत्यु के उपरांत आते हैं और कुछ मस्तिष्क से मृत लोंगों से। किन्तु ये स्रोत कुल गिनती में बड़ा फालस छोड़ जाते हैं। मृत्युदण्ड के उपरांत मृत्यु कैदियों और इच्छुक स्रोतों की संख्या प्रत्यारोपण की संख्या के आस–पास भी नहीं आते।

मृत्युदण्ड प्राप्त और उससे मृत कैदियों की संख्या स्वयं से सार्वजनिक नहीं है। हम केवल ऐमनेस्टी इंटरनेशल द्वारा चीनी दस्तावेजों से उपलब्ध कराई संख्या के आधार पर चल रहे हैं। वह संख्या, विश्व के और स्थानों के कुल मृत्युदण्ड से अधिक है, किन्तु अनुमानित कुल प्रत्यारोपणों के आस–पास भी नहीं है।

न्यूनतम 98 प्रतिशत प्रत्यारोपण के लिए अंग परिवार के दानकर्ताओं के अतिरिक्त औरों से आते हैं।[9] उदाहरण के लिए, किडनी के 40,393 केसों में से केवल 227– लगभग 0.6 प्रतिशत जो चीन में 1971 में से 2001 तक किये गए परिवार के दानकर्ताओं से आये।[37]

चीन की सरकार ने मृत्युदण्ड से मृत कैदियों के अंगों के प्रयोग की बात केवल 2005 में स्वीकार की,[38] हालांकि यह कई वर्षों से चलन में था। प्रशासन के पास ''राष्ट्र के शत्रुओं'' के अंगों के व्यापार को रोकने के लिए कोई रूकावट नहीं थी।

चीन में सार्वजनिक सूचनाओं के आधार पर ऐमनेस्टी इंटरनेशल द्वारा तैयार की रिपोर्ट[40] के अनुसार, चीन में 1995 से 1999 तक मृत्युदण्ड से मृत कैदियों की संख्या प्रतिवर्ष औसत 1680 थी। सन 2000 से 2005 के बीच प्रतिवर्ष औसत 1616 था। एक वर्ष से दूसरे वर्ष संख्या कम ज्यादा हुई है किन्तु प्रतिवर्ष औसत फालुन गोंग पर अत्याचार आरंभ होने से पहले और बाद में एक जैसा ही रहा। मृत्युदण्ड से मृत कैदियों की संख्या से चीन में फालुन गोंग पर अत्याचार के बाद से आई बढ़त को समझाया नहीं जा सकता।

सार्वजनिक रिर्पोटों के आधार पर, चीन में 1999 से पहले कुल लगभग 30,000[41] प्रत्यारोपण हुए थे और छः वर्ष के अंतराल 1994 से 1999 तक 18,500[42] हुए। शि बिगंयी, चीन चिकित्सा अंग प्रत्यारोपण ऐसासिशन के उप–प्रधान, का कहना है कि चीन में 2005 तक कुल लगभग 90,000[43] प्रत्यारोपण हुए, जिनमें 60,000 प्रत्यारोपण छः वर्ष के अंतराल 2000 से 2005 के बीच हुए जब से फालुन गोंग पर अत्याचार आरंभ हुए।

अंग प्रत्यारोपण के दूसरे परिचित स्रोत, इच्छुक परिवारिवाक दानकर्ता और मस्तिष्क से मृत व्यक्ति, हमेशा कम रहे हैं। सन 2005 में, जीवित लोगों से किडनी प्रत्यारोपण कुल प्रत्यारोपणों के केवल 0.5 प्रतिशत हुए[44]। पूरे चीन में सभी वर्षों के मस्तिष्क मृत लोगों से मार्च 2006 तक प्रत्यारोपण केवल 9 हुए हैं।[44,45] इन वर्गों से हाल के वर्षों में कोई उल्लेखनीय बढ़त नहीं हुई है। परिचित स्रोतों से छः वर्ष के 1994 से 1999 के अंतराल में 18,500 अंग प्रत्यारोपण किय गए, तो 2000 से 2005 तक के अगले छः वर्ष के अंतराल में भी प्रत्यारोपण के लिए उतने ही अंग उपलब्ध रहे होंगे। इसका अर्थ है कि 2000 से 2005 के छः वर्ष के अंतराल में हुए 41,500 प्रत्यारोपणों का स्रतोत समझ से बाहर है।

चीन में सभी प्रत्यारोपणों के लिए कहां से आते हैं? फालुन गोंग अभ्यासियों के अंग निकालने के आरोपों से इसका उत्तर आता है।

फिर से, संख्याओं में इस अन्तर में फालुन गोंग अभ्यासियों से अंग निकालने के आरोप सही साबित नहीं होते। किन्तु विपरीत, अंग प्रत्यारोपण के स्रोतों का पूर्ण स्पष्टीकरण आरोपों को झुठला देगा। यदि सभी अंग प्रत्यारोपणाों के अंगों के स्रोतों का पता लग सके, भले ही इच्छुक दानकर्ताओं या मृत्युदण्ड दिये कैदियों से, तब फालुन गोंग के आरोप झूठे साबित हो जाएंगे। किन्तु इस प्रकार पता करना असंभव है।

चीन में कैदियों को मृत्युदण्ड से मारने की संख्या मृत्युदण्ड के सार्वजनिक उपलब्ध रिकॉर्ड से कहीं अधिक होती है। चीन में मृत्युदण्ड के कोई सरकारी आंकड़े नहीं हैं, जिससे कुछ संख्या अनुमानित ही रहती है।

एक तरीका जो कुछ लोगों ने जो मृत्युदण्ड के आंकलन में सम्मिलित रहे हैं ने लगाया है वह है प्रत्यारोपण चिकित्साओं की संख्या। क्योंकि यह मालूम है कि कुछ प्रत्यारोपण मृत्युदण्ड से मृत कैदियों से आते हैं और परिवारिक दानकर्ता बहुत कम होते हैं। कुछ विश्लेषकों ने प्रत्यारोपण की संख्या से आंकलन किया है कि मृत्युदण्ड से मृत कैदियों की संख्या बढ़ गई है।

यह तर्क मानने योग्य नहीं लगता। प्रत्यारोपण से मृत्यु दण्ड से मृत कैदियों की संख्या नहीं निकाली जा सकती जब तक मृत्युदण्ड से मृत कैदी प्रत्यारोपण के एकमात्र स्रोत न हों। किन्तु, फालुन गोंग अभ्यासी दूसरे स्रोत हैं, जैसा आरोप है। मृत्युदण्ड से मृत कैदियों की संख्या से यह निष्कर्ष निकालना असंभव है कि वे अभ्यासी अंग प्रत्यारोपण के स्रोत नहीं हैं जहां मृत्युदण्ड से मृत कैदियों की संख्या प्रत्यारोपण की संख्या से निकाली जाती है।

क्या प्रत्यारोपणों में बढ़त मृत्युदण्ड से मृत कैदियों से अंग निकालने कार्यकुशलता के आधार पर समझाया जा सकता है? चीन में प्रत्यारोपणों की बढ़त फालुन गोंग पर अत्याचार और प्रत्यारोपण तकनीकों में विकास दोनों साथ हुई। किन्तु प्रत्यारोपणों में बढ़त सभी प्रत्यारोपण तकनीकों के बढ़ने के कारण हुई। चीन में किडनी प्रत्यारोपण की तकनीक फालुन गोंग पर अत्याचार आंरभ होने से पहले ही पूरी तरह विकसित थी। किन्तु किडनी प्रत्यारोपण फालुन गोंग पर अत्याचार आरंभ होने के बाद से दोगुणे से अधिक बढ़ गए। 1998 में 3,596[37] किडनी प्रत्यारोपण हुए थे।

एक दूसरा कारण जो मृत्युदण्ड से मृत कैदियों से एक से अधिक अंग निकालने के द्वारा अंग प्रत्यारोपण की बढ़त को नहीं समझा पाता वह है चीन में अंग–मिलान की व्यवस्था का व्यवस्थित न होना। वहां अंगों के मिलान और अदला–बदली के लिए कोई राष्ट्रीय नेटवर्क नहीं है। [46] चिकित्सक दानकर्ताओं के अंगों के व्यर्थ हो जाने की निंदा करते हैं, यह अफसोस करते हुए कि ''दानकर्ता से केवल किडनी ही प्रयोग हो पाई, जब दूसरे अंग व्यर्थ हो गए''।[46] प्रत्येक अस्पताल अंगों के लिए स्वयं अपनी पूर्ति और प्रतीक्षा सूची बना कर रखता है। रोगी एक अस्पताल से जाते हैं जहां अंग उपलब्ध नहीं है तो अस्पतालों में प्रत्यारोपण तुरंत हो जाता है।[47] अस्पताल, जहां अंग उपलब्ध नहीं होते, रोगियों को दूसरे अस्पताल जाने की सलाह देते हैं जहां वे कहते हैं कि प्रत्यारोपण के लिए अंग उपलब्ध है।[48] यह व्यवस्था का अभाव अंगों को कार्यकुशल प्रयोग कम कर देता है।

तीसरा कारण जो मृत्युदण्ड से मृत कैदियों के एक से अधिक अंगों के कारण अंग प्रत्यारोपण में बढ़त को नही समझा जाता वह है दूसरे स्थानों का अनुभव। किसी भी दूसरे स्थान पर उतनी ही संख्या में दानकर्ता रहते हुए प्रत्यारोपण इतनी तेजी से नहीं बढ़े, क्योंकि केवल प्रत्यारोपण की तकनीक के बदलाव के आधार पर। प्रति वर्ष कनाडा, अमेरीका और जापान के आंकड़े परिशिष्ट में दिये गये हैं।

चीन में अंग प्रत्यारोपण में बढ़त फालुन गोंग पर अत्याचार बढ़ने के कारण साथ–साथ हुई है। फालुन गोंग पर अत्याचार और प्रत्यारोपणों में बढ़त, स्वयं में, आरोपों के सही सिद्ध नहीं

करते। किन्तु वे आरोपों को मजबूत करते हैं। यदि दोनों साथ–साथ न होते, तो इनके अभाव से आरोप कमजोर पड़ जाते।

28) प्रतिरोपण के भावी स्रोत

चीन में अंग प्रतिरोपण सर्जरी एक फलता–फूलता कारोबार है। 1999 से पहले पूरे चीन में केवल 22 यकृत प्रतिरोपण केन्द्र 49 थे और 2006 के अप्रैल के मध्य 50में 500। गुर्दा प्रतिरोपण केन्द्रों की संख्या 2001 के 106 से बढ़ कर 2005 में 368 हो गई।

इससे मिलने वाली धनराशि ने अंग प्रतिरोपण में विशेषज्ञता प्राप्त समर्पित सुविधाओं को जन्म दिया। पेकिंग यूनिवर्सिटी थर्ड हास्पिटल लीवर ट्रांसप्लांटेशन सेंटर की स्थापना अक्तूबर 2002 में हुई, बीजिंग अंग प्रतिरोपण केन्द्र की स्थापना 2002 नवंबर में हुई, पीपुल्स लिबरेशन आर्मी नंबर 309 अस्पताल के अंग प्रतिरोपण केन्द्र की स्थापना अप्रैल 2002 में और पीपुल्स लिबरेशन आर्मी आर्गन ट्रांस्प्लांटेशन रिसर्च इंस्टीट्यूट (शंघाई चांगझेंग अस्पताल का अंग प्रतिरोपण केन्द्र) की स्थापना मई 2004 में, शंघाई क्लिनिकल मेडिकल सेंटर फॉर आर्गन ट्रांस्प्लांट्स की स्थापना 2001 में हुई। तियानचिन में ओरिएंटल आर्गन ट्रांस्प्लांट सेंटर का निर्माण 2002 में शुरू हुआ। 300 बिस्तर वाले इस अस्पताल की 14 मंजिलें जमीन से ऊपर हैं जबकि दो मंजिलें भूमिगत हैं। यह तियानचिन शहर की ओर से निर्मित एक सार्वजनिक सुविधा है और एशिया का सबसे बड़ा प्रतिरोपण केन्द्र है।

इन सुविधाओं की स्थापना अंग प्रतिरोपण की विशालता और उन्हें जारी रखने के प्रति संकल्प दोनों का सूचक है। अंग प्रतिरोपण को समर्पित समूची सुविधाओं का सृजन दीर्घकालीन योजना को उजागर करता है।

वस्तुतः तमाम चीनी अंग प्रतिरोपण के लिए अंगों के स्रोत चीनी कैदी हैं। यहां यह बहस है जिसे इस रिपोर्ट में भी पेश किया गया है कि क्या इन तमाम कैदियों को पहले सजाए मौत सुनाई जा चुकी है या उनमें से गिरफ्तार किए गए कुछ फालुन गोंग अभ्यासी हैं जिन्हें कैद की सजा दी गई है या कोई भी सजा नहीं दी गई है। लेकिन इसपर कोई बहस नहीं है कि अंगों के स्रोत कैदी हैं; यह निर्विवाद है। चीन में समर्पित अंग प्रतिरोपण सुविधाओं की स्थापना कैदियों से अंग हासिल करना जारी रखने की मंशा का एक खुला एलान है।

फिर भी चीन सरकार ने कानून और सरकारी बयानों, दोनों में कहा है कि वह मौत की सजा पाए उन कैदियों से अंग हासिल करना बंद कर देगी जिन्होंने अंगदान करने पर सहमति नहीं दी है। और जैसा कि इसी रिपोर्ट में दूसरी जगह कहा गया है, मौत की सजा सुनाए गए कैदियों से अंग दान की कोई सार्थक सहमति जैसी कोई चीज नहीं है।

इन समर्पित सुविधाओं का सृजन न सिर्फ इस सवाल को जन्म देता है कि अतीत में किए गए अंग प्रतिरोपण के स्रोत क्या थे, बल्कि यह भी कि इतने ढेर सारे अंगों के स्रोत क्या होंगे जिनका चीन भविष्य में प्रतिरोपण करना चाहता है? किन से ये अंग आएंगे? अगर चीन मौत

की सजा पाए कैदियों पर दानकर्ता की सहमति की आवश्यकता के बारे में अपने कानून और अपने कथित नीति का पालन करता है तो यह स्रोत अनुमानतः खत्म हो जाएगा या उसमें उल्लेखनीय कमी आ जाएगी।

अंग प्रतिरोपण को समर्पित इन संस्थाओं का निर्माण करते हुए चीनी प्रशासन को जरूर ही यह विश्वास होगा कि अभी और भविष्य में ऐसे लोगों से अंग का तैयार स्रोत होगा जो अभी जीवित हैं और कल मर जाएंगे। कौन हैं ये लोग? फालुन गोंग अभ्यासियों की एक विशाल कैदी आबादी इसका उत्तर देती है।

29) गायब अंगों वाली लाशें

हिरासत में मरे फालुन गोंग अभ्यासियों के अनेक परिजन ने रिपोर्ट दी है कि उनके प्रियजन की लाशों में चीरे लगाए गए थे और शरीर के हिस्से गायब थे। इन क्षत विक्षत लाशों के बारे में प्रशासन कोई सुसंगत जवाब नहीं दे पाया। एक बार फिर क्षत विक्षत लाशों के बारे में साक्ष्य इस रिपोर्ट के परिशिष्ट में लगाए गए हैं।

हमारे पास इन क्षत विक्षत लाशों की बस कुछ ही मिसालें हैं। इसके कोई आधिकारिक जवाब नहीं हैं कि वे क्यों क्षत विक्षत हैं। उनका क्षत विक्षत किया जाना अंग निकाले जाने के अनुरूप है।

हमारी रिपोर्ट के प्रथम संस्करण में परिशिष्ट 12 में एक व्यक्ति की तस्वीर थी। अंग निकालने के लिए उसके शरीर में चीरा लगाया गया था और फिर सिलाई कर दी गई थी। एक जो टिप्पणी हमें मिली वह यह थी कि तस्वीर की सिलाई ऑटोप्सी से सुसंगत है।

हम मानते हैं कि हो सकता है कि अंग वास्तव में ऑटोप्सी के लिए निकाले गए हों ताकि मृत्यु के कारण का निर्धारण किया जा सके। ऑटोप्सी की गई लाश में भी तस्वीर में दिखाए गए के समान सिलाई के निशान हो सकते हैं। चीन के बाहर, अंग दानकर्ताओं को छोड़ कर, यह संभावित कारण है कि क्यों किसी लाश से अंग निकाले गए। इसी तरह, चीन के बाहर, जब लोगों के खून की जांच की जाती है, तो यह उनके अपने स्वास्थ्य के लिए होती है। बहरहाल, यह सुझाना कि जिन फालुन गोंग अभ्यासियों को जान से मार देने के हद तक यातनाएं दी जाती है, उनके खून की जांच उनके स्वास्थ्य के लिए की जाती है या जिन अभ्यासियों को यातनाएं दे कर मार दिया गया उनकी लाश की ऑटोप्सी मृत्यु के कारणों को जानने के लिए की जा रही है, यातना के अनुभवों को झुठलाना होगा।

लाश जिसकी तस्वीर पेश की गई थी, वांग बिन की थी। पिटाई से श्री वांग की गर्दन की धमनी और प्रमुख रक्त वाहिनी फट गई थी। नतीजतन उनके टॉन्सिल में घाव थे। उनकी लसीका ग्रंथि कुचली थी और अनेक हड्डियां टूटी थी। उनके हाथों के पिछले हिस्से और उनके

नथुनों में सिग्रेट से जलाए जाने के निशान थे। उनके समूचे शरीर पर खरोंचों के निशान थे। हालांकि वह मौत के निकट थे, रात में उन्हें फिर यातनाएं दी गईं। अंत में वह होश खो बैठे। 4 अक्तूबर की रात में श्री वांग ने अपने जख्मों के चलते दम तोड़ दिया।

किसी ऑटोप्सी रिपोर्ट का उद्देश्य मौत के कारणों का निर्धारण करना होता है जब ये कारण अनजान होते हैं। लेकिन वांग बिन के मामले में अंग निकाले जाने से पहले मौत के कारणों का पता था। यह कहना कि यातनाएं दे कर मार डालने के बाद मौत के कारणों का निर्धारण करने के लिए वांग बिन की ऑटोप्सी होगी, सही नहीं है। ऐसा कोई संकेत नहीं है कि पीड़ित के अंग निकाले जाने से पहले वांग बिन के परिवार से सहमति मांगी गई थी। बाद में उन्हें कोई ऑटोप्सी रिपोर्ट भी नहीं दी गई। वांग बिन के शरीर पर सिलाई के निशानों के लिए ऑटोप्सी की दलील तर्कसंगत नहीं है।

30) स्वीकारोक्ति

मन्दरिन भाषी जांचकर्ताओं ने अनेक अस्पतालों और अंग प्रतिरोपण करने वाले डाक्टरों को फोन किया और प्रतिरोपण के बारे में पूछा। फोनकर्ताओं ने खुद को संभावित अंग प्राप्तकर्ता या संभावित प्राप्तकर्ताओं का संबंधी बताया। फोन नंबर इंटरनेट से हासिल किए गए। इन फोन कॉलों के नतीजे में अनेक स्वीकारोक्तियां सामने आईं कि फालुन गोंग अभ्यासी अंग प्रतिरोपण के स्रोत हैं। हमारी पिछली रिपोर्ट के बाद और भी फोन कॉल किए गए और स्वीकारोक्तियां परिशिष्ट में दी गई हैं।

अगर फोन नंबर किसी अस्पताल का सामान्य नंबर होता तो फोनकर्ता आम तौर पर बात की शुरूआत अस्पताल के प्रतिरोपण विभाग से संपर्क कराने के आग्रह के साथ करते। उधर से जो भी फोन उठाता, वे उससे शुरू में प्रतिरोपण आपरेशनों से संबंधित आम सूचनाओं पर चर्चा करते। आम तौर पर लोग बात करने के लिए फोनकर्ताओं को प्रतिरोपण विभाग के किसी डाक्टर या मुख्य चिकित्सक से संपर्क कराने में मदद करते। अगर डाक्टर उपलब्ध नहीं होता तो फोनकर्ता बाद में उस विशेष डाक्टर या मुख्य चिकित्सक से संपर्क करने के लिए फिर फोन करता और डाक्टर या मुख्य चिकित्सक से बातें करता।

आम तौर पर अस्पताल के स्टाफ अंग प्रतिरोपण चाहने वाले लोगों (या उनके परिजन) से बातें करते और संबंधित डाक्टर से संपर्क कराने में सक्रियता दिखाते।

फोनकर्ताओं में से एक "सुश्री एम" ने मार्च 2006 के शुरू में हम में से एक को बताया कि वह शांशी में सार्वजनिक सुरक्षा ब्यूरो से संपर्क बनाने में कामयाब रही। वहां उत्तर देने वाले व्यक्ति ने उन्हें बताया कि अंग दान के लिए कैदियों में से जवान और स्वस्थ को चुना जाता है। अधिकारी निष्कपट बेबाकी से बताता चला गया कि अगर उनको बहला–फुसला कर सफल प्रतिरोपण के लिए उनसे अनिवार्य खून के नमूने पाने में असफलता होती है तो कर्मचारी बलपूर्वक नमूना हासिल करते हैं।

एम ने 18 या 19 मार्च 2006 को पूर्वोत्तर चीन में शेनयांग के पीपुल्स लिबरेशन आर्मी अस्पताल के आंख विभाग के एक प्रतिनिधि से बात की। हालांकि वह उसके पूर्ण रिकार्डेड आलेख बनाने में सक्षम नहीं हो पाई, उनके नोट इंगित करते हैं कि खुद को अस्पताल के निदेशक के रूप में चिह्नित करने वाले व्यक्ति ने कहा कि उनकी सुविधा में "अनेक कॉर्निया आपरेशन किए गए।" उन्होंने कहा कि "हमारे पास ताजा कॉर्निया हैं।" जब इसका मतलब पूछा गया तो निदेशक ने जवाब दिया, "...शवों से अभी–अभी निकाले हुए।"

बीजिंग के आर्मी अस्पताल 301 के एक सर्जन ने अप्रैल 2006 में एम से कहा कि उसने खुद से यकृत प्रतिरोपण किए हैं। सर्जन का कहना है कि अंगों का स्रोत एक "सरकारी राज" है और स्रोत उजागर करने वाले को "इस तरह के आपरेशन करने से अयोग्य ठहराया जा सकता है।"

जून 2006 की शुरुआत में मिशान नगर बंदीगृह के एक अधिकारी ने एक टेलीफोन कर्ता को बताया कि केन्द्र में उस वक्त 40 साल से कम उम्र के कम से कम पांच या छः पुरूष फालुन गोंग कैदी हैं जो अंग दानकर्ता के रूप में उपलब्ध हैं। मार्च 2006 के मध्य में शंघाई के झोंगशान अस्पताल के डाक्टर ने बताया कि उनके यहां तमाम अंग फालुन गोंग अभ्यासियों से आते हैं। छियानफोशान अस्पताल के एक डाक्टर के मार्च के बयान में यह अंतर्निहित थी कि उस वक्त उनके पास फालुन गोंग के लोगों के अंग थे। उनका कहना था कि अप्रैल में "इस तरह की और भी लाशें होंगी..." मई में, नानिंग सिटी के मिंजू अस्पताल के डा. लू ने फोनकर्ता को बताया कि फालुन गोंग अभ्यासियों के अंग उनके अस्पताल में उपलब्ध नहीं है और सुझाव दिया कि वह उन्हें हासिल करने के लिए गुआंगझू फोन करे। उन्होंने स्वीकार किया कि अंग हासिल करने के उद्देश्य से 30–35 साल के स्वस्थ फालुन गोंग कैदियों का चयन करने के लिए वह पहले जेलों का दौरा कर चुके हैं।

हेनान प्रांत के झेंगझाउ मेडिकल यूनिवर्सिटी के डा. वांग ने 2006 के मार्च के मध्य में सहमति जताई कि "हम जवान और स्वस्थ गुर्दा चुनते हैं..." 2006 के अप्रैल में गुआंगझू मिलिट्री रीजन अस्पताल के डा. झू ने कहा कि उस वक्त उनके पास बी टाईप के कुछ गुर्दे हैं, लेकिन 1 मई से पहले "कई बैच" होंगे और शायद 20 मई या बाद तक और नहीं होगा। लियाओनिंग प्रांत के छिनहुआंगदाओ नगर के प्रथम बंदीगृह के एक अधिकारी ने फोनकर्ता को 2006 के मई के मध्य में कहा कि फालुन गोंग के गुर्दे हासिल करने के लिए उसे अंतर्वर्ती जन अदालत को फोन करना चाहिए। उसी दिन उस अदालत के एक अधिकारी ने कहा कि उनके पास फालुन गोंग का कोई उपयोग करने लायक गुर्दा नहीं है, लेकिन अतीत में, खास तौर पर 2001 में उनके पास ऐसे गुर्दे थे। आखिरकार, 2006 के मई में चिनझाउ जन अदालत के प्रथम आपराधिक ब्यूरो ने फोनकर्ता को कहा कि अभी फालुन गोंग गुर्दों तक पहुंच "योग्यता" पर निर्भर करता है।

तियानचिन नगर केन्द्रीय अस्पताल के डा. सोंग ने 2006 के मार्च के मध्य में बताया कि उनके अस्पताल में अभी दस धड़कते दिल हैं। फोनकर्ता ने जब उनसे पूछा कि क्या उसका मतलब "जीवित शरीर" है तो सोंग ने जवाब दिया, "हां, ऐसा ही।" इसके दो हफ्ते बाद वुहान सिटी तोंगची अस्पताल के एक अधिकारी से फोनकर्ता ने पूछा, "...हमें उम्मीद है कि गुर्दा दान करने वाले जीवित हैं। (हम) कैदियों से जीवित अंग प्रतिरोपण की तलाश कर रहे हैं, मिसाल के तौर पर, फालुन गोंग का अभ्यास करने वाले कैदियों के जीवित शरीर का उपयोग करते हुए, क्या यह संभव है?" अधिकारी का जवाब था कि उनके संस्थान के लिए "यह कोई समस्या नहीं है।"

नीचे चीन का एक नक्शा दिया गया है जिसमें उन क्षेत्रों को इंगित किया गया है जहां बंदीगृह या अस्पताल के अधिकारियों ने फोन करने वाले जांचकर्ताओं के समक्ष स्वीकारोक्तियां की हैं:

ज्यादातर उद्धृत फोन कॉल आलेख परिशिष्ट में दिए गए हैं। दृष्टांत के लिए तीन टेलीफोन वार्ताओं के उद्धरण नीचे दिए जा रहे हैं:

मिशान सिटी बंदीगृह, हीलोंगचियांग प्रांत (8 जून 2006):

एम: "क्या आपके पास फालुन गोंग (अंग) आपूर्तिकर्ता है?..."
ली: "हम उपयोग करते हैं, हां।"
एम: "...अभी क्या है?"
ली: "...हां।"
...
एम: "क्या हम चुनने के लिए आएं, या आप सीधे हमें उपलब्ध कराएंगे?"
ली: "हम आपको उपलब्ध कराएंगे।"
एम: "कितनी कीमत होगी?"
ली: "जब आप आएंगी, हम चर्चा कर लेंगे।"
...
एम: "...आपके पास 40 साल से कम के कितन (फालुन गोंग आपूर्तिकर्ता) हैं?"
ली: "कुछेक हैं।"
...
एम: "क्या वे पुरूष हैं या महिला?"
ली: "पुरूष।"
...
एम: "अब, ... के लिए, पुरूष फालुन गोंग (कैदी), उनमें से कितने आपके पास हैं?"
ली: "सात, आठ, हमारे पास अभी (कम से कम) पांच, छः हैं।"
एम: "क्या वे देहातों के हैं या शहर के।"
ली: "देहातों के।"

(2) गुआंगशी स्वायत्तशासी क्षेत्र का नानिंग सिटी मिंजू अस्पताल
(22 मई 2006)

एमः "...क्या आप फालुन गोंग अभ्यासियों से अंग दिला सकते हैं?"
डा. लू: "मुझे बताने दें हमारे पास (उन्हें) हासिल करने का कोई रास्ता नहीं है। अब गुआंगशी में इसे हासिल करना खासा मुश्किल है। अगर आप इंतजार नहीं कर सकतीं तो मैं आपको गुआंगझो जाने की सलाह दूंगा क्योंकि उनके लिए अंग हासिल करना बहुत आसान है। वे देश भर में (उनकी) खोज कर सकते हैं। चूंकि वे यकृत प्रतिरोपण कर रहे हैं, वे आपको उसी समय गुर्दा दे सकते हैं। इस तरह यह उनके लिए बहुत आसान है। बहुत सारी जगहों पर जहां आपूर्तियों की कमी आती है, वे उनके पास मदद के लिए जाते हैं..."
एमः "उनके लिए हासिल करना क्यों आसान होता है?"
डा. लू: "क्योंकि वह एक महत्वपूर्ण संस्थान है। वे पूरे विश्वविद्यालय के नाम पर (न्यायिक) व्यवस्था से संपर्क करते हैं।"
एमः "तो वे फालुन गोंग अभ्यासियों के अंग का उपयोग करते हैं।"
डा. लू: "सही।"
एमः "...आप पहले क्या इस्तेमाल करते थे (फालुन गोंग अभ्यासियों के अंग), क्या ये बंदीगृह के थे या जेलों के? "
डा. लू: "जेलों से।"
एमः "...और ये स्वस्थ फालुन गोंग अभ्यासियों के थे...?"
डा. लू: "बिल्कुल, हम बढ़िया चुनते क्योंकि हम अपने आपरेशनों में क्वालिटी सुनिश्चित करते हैं।"
एमः "इसका मतलब है कि आप खुद से अंग चुनते हैं?"
डा. लू: "बिल्कुल..."
एमः "अंगों का आपूर्तिकर्ता आम तौर पर कितनी उम्र के होते हैं?"
डा. लू: "आम तौर पर 30–35 साल के।"
एमः "...तब आप चुनने के लिए खुद जेल जाते होंगे?"
डा. लू: "बिल्कुल। हमें चुनना होता है।"
एमः "क्या होता है अगर चुना हुआ कैदी अपना खून नहीं देता है?"
डा. लू: "उसे निश्चित रूप से देना होगा।"
एमः "कैसे?"
डा. लू: "वे निश्चित रूप से रास्ता निकाल लेंगे। आप क्यों परेशान होती हैं? इस तरह की चीजों पर आपको परेशान नहीं होना चाहिए। उनकी अपनी प्रक्रियाएं हैं।"
एमः "क्या उस व्यक्ति को पता होता है कि उसके अंग निकाले जाएंगे?"
डा. लू: "नहीं, वह नहीं जानता है।"

ओरियंटल आर्गन ट्रांसप्लांट सेंटर (तियानचित सिटी नंबर 1 सेंट्रल अस्पताल के नाम भी जाना जाता है), तियानचिन सिटी (15 मार्च 2006)

एनः "क्या डा. सोंग हैं?"
सोंगः "जी हां, कहिए।"
...
एनः "उसके डाक्टर ने उससे कहा है कि गुर्दा काफी अच्छा है क्योंकि वह (आपूर्तिकर्ता) ... फालुन गोंग का अभ्यास करता है।"
सोंगः "बेशक। हमारे पास वे हैं जिनकी सांसें चलती हैं और दिल धड़कते हैं...अभी तक, इस साल के लिए, हमारे पास दस से ज्यादा गुर्दे हैं, इस तरह के दस से ज्यादा गुर्दे।"
एनः "इस तरह के दस से ज्यादा गुर्दे? आपका मतलब है जीवित शरीर?"
सोंगः "हां ऐसा ही।"

फोनकर्ता एम ने करीब 80 अस्पतालों में फोन किए। फोन करने के क्रम में कुछ अस्पतालों में एम ने विशिष्ट डाक्टर से बात करने की इच्छा जताई। वह प्रतिरोपण डाक्टरों से बात करने में कामयाब रहीं। 10 अस्पतालों ने माना कि वे अंग आपूर्तिकर्ता के रूप में फालुन गोंग अभ्यासियों का उपयोग करते हैं। एम ने डाक्टरों से बात करने के लिए दोबारा फोन किए। 5 अस्पतालों ने कहा कि वे अंग आपूर्तिकर्ता के रूप में फालुन गोंग अभ्यासियों को हासिल कर सकते हैं। 14 अस्पतालों ने स्वीकार किया कि वे कैदियों के जीवित अंगों का उपयोग करते हैं। 10 अस्पतालों ने कहा कि अंगों का स्रोत गोपनीय है और वे टेलीफोन पर उसे उजागर नहीं कर सकते।

फोनकर्ता एन ने चीन के करीब 40 अस्पतालों को फोन किया। उनमें से 5 ने फालुन गोंग अभ्यासियों के अंग के उपयोग करने की बात स्वीकार की। एन ने स्वीकार करने वाले डाक्टरों को दोबारा फोन किया। अस्पताल में उनसे अब भी संपर्क किया जा सकता था। एन ने चीन के 36 बंदीगृह और अदालतों को भी फोन किए। उनमें से 4 ने फालुन गोंग अंगों के इस्तेमाल की बात स्वीकार की।

अस्पतालों को फोन करते समय, कुछ मामलों में एन सीधे विशिष्ट डाक्टरों से बात करना चाहती। वह प्रतिरोपण डाक्टरों से बात करने में सफल रही थी। उसका तरीका था कि वह सम्पर्कित पक्ष, अस्पताल के डाक्टर इत्यादि से सीधे पूछती कि क्या वे फालुन गोंग अभ्यासियों के अंगों का इस्तेमाल करते हैं।

उन्हें इसपर जो विशिष्ट प्रतिक्रिया मिलती वह यह थी कि उस व्यक्ति को इस तरह के प्रश्नों की जरा भी अपेक्षा नहीं होती। वह कुछ क्षण के लिए यह सोचने के लिए रुकता कि इसपर क्या जवाब दिया जा सकता है। विराम के बाद करीब 80 प्रतिशत यह स्वीकार नहीं करते कि वे फालुन गोंग अभ्यासियों के अंगों का इस्तेमाल करते हैं। फालुन गोंग अभ्यासियों के अंगों के इस्तेमाल नहीं स्वीकार करने वालों का 80 प्रतिशत यह मानता कि वे जीवित शरीर का इस्तेमाल करते हैं जो कैदी होते हैं। 10 से कम व्यक्ति ने जैसे ही फालुन गोंग अभ्यासियों के बारे में सवाल सुने उन्होंने फोन रख दिए।

हम में से एक ने कनाडा और अमेरिका के फालुन गोंग समुदाय की तरफ से एक प्रमाणित मन्दरिन–अंग्रेजी दुभाषिए से अधिकारियों और फोनकर्ताओं के बीच की उद्धृत एवं रिकार्ड की गई टेलीफोन वार्ता सुनी। मन्दरिन और अंग्रेजी में संबंधित आलेखों की प्रमाणित प्रतियां हमें दी गईं।

इस रिपोर्ट में उपयोग किए गए उनके हिस्सों के प्रमाणित अनुवादक के अनुवाद के सही और शुद्ध होने का सत्यापन ओंटारियो सरकार के एक प्रमाणित दुभाषिए श्री सी. वाई. ने किया है। उन्होंने सत्यापित किया है कि उन्होंने इस रिपोर्ट में उल्लेखित रिकार्ड की गई वार्ता सुनी है और आलेखों को चीनी भाषा में तथा वार्ताओं के अंग्रेजी अनुदित संस्करण पढ़े हैं और पुष्टि करते हैं कि आलेख सही है और अनुवाद दुरुस्त है। फोन कॉल के मूल रिकार्ड भी उपलब्ध हैं। हम में से एक ने मन्दरिन से अंग्रेजी में अनुवाद और कॉल की अन्य विशिष्टताओं पर चर्चा करने के लिए 27 मई को दो फोनकर्ताओं से टोरंटो में मुलाकात की।

हमारा निष्कर्ष है कि जांचकर्ताओं के साक्षात्कार के आलेखों में मौखिक स्वीकारोक्तियों पर भरोसा किया जा सकता है। हमारे दिमाग में कोई शक नहीं है कि जिन लोगों के साथ साक्षात्कार करने का दावा किया गया है, उनके साथ इंगित समय और स्थान पर साक्षात्कार हुए हैं और जो कुछ कहा गया है, आलेख उनको सही–सही अभिव्यक्त करते हैं।

इसके साथ ही, जो कुछ कहा गया, उसके सारांश पर यकीन किया जा सकता है। जैसे जैसे बीजिंग ओलंपिक 2008 निकट आता जा रहा है, अंगों की कथित जब्ती पर हाल के अंतरराष्ट्रीय हंगामा के परिप्रेक्ष्य में देखने पर विभिन्न संस्थानों में की गई स्वीकारोक्ति चीन सरकार के प्रतिष्ठात्मक हितों के विरूद्ध है जो विश्व समुदाय को यह समझाने की कोशिश कर रही है कि महत्वपूर्ण अंगों को हासिल करने के लिए फालुन गोंग कैदियों की व्यापक हत्याएं नहीं की गई हैं।

31) एक अपराध स्वीकृति

एनी छद्य नाम का उपयोग करने वाली एक महिला ने हमें जानकारी दी कि उसके सर्जन पति ने उसे बताया था कि अक्तूबर 2003 के पहले दो साल के दौरान पूर्वोत्तर चीन में शेनयांग शहर के सुचियातुन अस्पताल में दवा दे कर बेहोश किए गए करीब 2,000 कैदियों के कॉर्निया निकाले। इसके बाद उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया। सर्जन ने अपनी पत्नी से स्पष्ट कर दिया कि कॉर्निया का कोई भी "दानकर्ता" जिंदा नहीं बचा क्योंकि दूसरे सर्जनों ने उनके शरीर से दूसरे अनिवार्य अंग निकाल लिए। इसके बाद उनके शरीरों को जला दिया गया। एनी फालुन गोंग अभ्यासी नहीं है।

एनी ने इससे पहले एपोक टाइम्स के 17 मार्च संस्करण में प्रकाशित एक रिपोर्ट में कहा था, "हमारे परिवार के सदस्यों में से एक फालुन गोंग अभ्यासियों के अंग हासिल करने के लिए किए गए आपरेशन में लिप्त था। इसने हमारे परिवार को बहुत पीड़ा पहुंचाई।

उसके साक्षात्कार ने एक विवाद को जन्म दिया कि वह सच्चाई बयान कर रही है या नहीं। 7 जुलाई 2006 को जारी अपनी रिपोर्ट के पहले संस्करण के लिए हमने विवाद को किनारे कर दिया जो उनके बयान की विश्वसनीयता पर उभरा था। हमने अपनी पहली रिपोर्ट के लिए भी एनी का साक्षात्कार किया था। बहरहाल, उन्होंने जो विवरण उपलब्ध कराए, उनसे हमें समस्या हो गई क्योंकि हमारे लिए स्वतंत्र रूप से उसकी पुष्टि करना असंभव था। हम अनन्य स्रोत सूचना के रूप में उसको अपने निष्कर्षों का आधार बनाने के अनिच्छुक थे। इस लिए, अंत में, अनन्य स्रोत सूचना के बजाय हमने एनी की बातों को बस उन्हीं जगहों पर लिया जहां उनकी पुष्टि की जा सकती थी और वे अन्य साक्ष्यों के साथ मेल खाती थी।

अपनी रिपोर्ट के इस संस्करण में हम सीधे तौर पर विवाद का सामना कर रहे हैं। हम स्वीकार करते हैं कि ऐनी जो कहती हैं कि उनके पति ने उनको बताया है, वह न सिर्फ उन्हें बताया गया है, बल्कि विश्वसनीय है। ऐनी की गवाही, खुद अपने आधार पर, आरोप को स्थापित करने में बहुत दूर तक जाती है।एपोक टाइम्स के साथ उनके 17 मार्च के साक्षात्कार से उभरे विवाद के विभिन्न बिंदुओं पर हमने सूचियातुन के बारे में एक परिशिष्ट में विस्तार से चर्चा की है।

32) पुष्टिकारक अध्ययन

हमारी जांच से स्वतंत्र और इतर दो अन्य जांच हैं। वे उसी सवाल से रुबरु हुए हैं जिससे हम हुए हैं कि क्या चीन में फालुन गोंग अभ्यासियों से अंग हासिल किए जा रहे हैं। दोनो उसी निष्कर्ष पर पहुंचे हैं जिनपर हम पहुंचे हैं। ये स्वतंत्र जांच हमारे अपने निष्कर्षों की पुष्टि करती हैं।

मिन्नेसोटा यूनिवर्सिटी के मानवाधिकार एवं मेडिसिन कार्यक्रम के संयुक्त निदेशक किर्क एलिसन का अध्ययन हमारी रिपोर्ट के जारी होने से पहले किया गया था। हालांकि उनका अध्ययन हमारी रिपोर्ट के जारी होने के कुछ दिन बाद, 25 जुलाई 2006 को आया, डा. एलिसन अपने निष्कर्षों पर पहले ही पहुंच चुके थे। उन्होंने भी यह निष्कर्ष निकाला कि फालुन गोंग से अंग प्राप्त किए जा रहे हैं।

दूसरी जांच यूरोपीय संसद के उप राष्ट्रपति एडवर्ड मैकमिलन–स्कॉट ने की थी। डा. एलिसन और हमारे विपरीत मैकमिलन 19–21 मई 2006 को वास्तव में चीन जाने में सफल रहे। वहां उन्होंने दो गवाहों काओ दोंग और नियु चिनपिंग के साथ साक्षात्कार किए। काओ दोंग से अपनी मुलाकात के बारे में मैकमिलन–स्कॉट बताते हैं कि उन्होंने

> "पूछा कि क्या उन्हें चीन में अंग निकाले जाने के किसी शिविर की जानकारी है। उन्होंने बताया कि वह निश्चित रूप से जानते हैं और उन्हें पता है कि वहां कौन लोग भेजे गए हैं। उन्होंने अपने एक मित्र, फालुन गोंग का अभ्यासी, की लाश देखी है। उनके शरीर में उस जगह छेद थे जहां से अंग निकाले गए थे।"

काओ दोंग जब मैकमिलन–स्कॉट से मिल कर गए, उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। अधिकारियों ने सितंबर में उनका तबादला गांसू प्रांत कर दिया और उनकी गिरफ्तारी का एक वारंट जारी किया गया। दिसंबर में चार आरोपों के तहत उनके खिलाफ अभियोजन चलाया गया। जज ने व्यवस्था दी कि इस मामले में सुनवाई नहीं क्योंकि मामला बीजिंग में कार्यालय 610 (इस कार्यालय को फालुन गोंग के दमन की जिम्मेदारी सौंपी हुई है) के कार्यक्षेत्र में आता है।

33) चीन सरकार का जवाब

चीन सरकार ने हमारी रिपोर्ट के पहले संस्करण का जैसे–तैसे जवाब दिया। ज्यादातर, जवाब में फालुन गोंग पर हमले किए गए थे। यह तथ्य कि चीन सरकार हमारी रिपोर्ट पर अपने जवाब में फालुन गोंग पर हमले को केन्द्र बिंदू बनाएगी, रिपोर्ट के विश्लेषण को सुदृढ़ करता है। ये इस तरह के हमले हैं जो चीन में फालुन गोंग अभ्यासियों के बुनियादी मानवाधिकारों के उल्लंघन को संभव बनाते हैं।

उनके जवाब में हमारी रिपोर्ट के पहले संस्करण में बस दो तथ्यात्मक गलतियां निकाली गईं। एक परिशिष्ट में, एक शीर्षक में, हमने दो चीनी शहरों को गलत प्रांत में डाल दिया था। हमारी रिपोर्ट के विश्लेषण या निष्कर्षों से इन गलतियों का कोई लेना–देना नहीं था।

एक परिशिष्ट में हमने चीनी जवाब और अपनी प्रतिक्रिया बड़े विस्तार से चर्चा की है। यहां हम इस बात को रेखांकित करते हैं कि यह तथ्य कि तमाम संसाधनों और सूचना के बावजूद, संसाधन और सूचना जो हमारे पास नहीं है, चीन सरकार किसी भी तरह हमारी रिपोर्ट का खंडन नहीं कर सकी, जताता है कि हमारे निष्कर्ष सही हैं।

G. अतिरिक्त शोध

हम इस दूसरे संस्करण को भी इस विषय पर अंतिम शब्द नहीं मानते हैं। अगर मौका दिया गया, तो रिपोर्ट का यह संस्करण पूरा करने से पहले हम खुद भी बहुत कुछ करते। लेकिन इसका मतलब जांच के ऐसे अवसरों का इस्तेमाल करना होता जो अभी हमारे लिए खुले नहीं हैं। अगर कोई व्यक्ति या सरकार इसके सारांश पर कोई टिप्पणी करना चाहती है या कोई अतिरिक्त सूचना प्रदान करना चाहती है तो हम उसका स्वागत करेंगे।

हम प्रतिरोपण संबंधी चीनी अस्पतालों के रिकार्ड देखना चाहेंगे। क्या फाइलों पर सहमति है? क्या अंगों के स्रोत के रिकार्ड हैं?

दानकर्ता अनेक प्रकार के प्रतिरोपण आपरेशनों में जीवित रह सकते हैं। कोई भी पूर्ण यकृत या हृदय दान में जिंदा नहीं बच सकता। लेकिन गुर्दों का दान आम तौर पर जानलेवा नहीं होता।

हम यह देखने के लिए अंगों के दान की एक रैंडम सैंपलिंग करना चाहेंगे कि क्या हम दानकर्ता को खोज सकते हैं।

मृत दानकर्ताओं के परिजन को जानकारी होनी चाहिए कि दानकर्ता ने सहमति दी थी। वैकल्पिक रूप से, परिवार के सदस्यों को खुद ही सहमति देनी चाहिए थी। यहां भी हम यह देखने के लिए मृत दानकर्ताओं के परिवार के निकटतम संबंधियों की रैंडम सैंपलिंग करना चाहेंगे कि क्या उनके परिवारों ने अंग दान के लिए खुद सहमति दी थी या दानकर्ता की सहमति की उनको जानकारी थी।

चीन हाल के वर्षों में अंग प्रतिरोपण सुविधाओं के विस्तार में लगा है। इस विस्तार के साथ व्यवहार्यता अध्ययन भी हुए होंगे जिनमें अंगों के स्रोत इंगित किए गए होंगे। हम इन व्यवहार्यता अध्ययनों को देखना चाहेंगे।

H. निष्कर्ष

अपने अतिरिक्त शोध के आधार पर हमारा मूल निष्कर्ष और सुदृढ़ हुआ है कि आरोप सही हैं। हम मानते हैं कि अनिच्छुक फालुन गोंग अभ्यासियों से बड़े पैमाने पर अंग छीने जा रहे हैं और आज भी यह जारी है।

हमने निष्कर्ष निकाला है कि चीन सरकार और उसकी एजेंसियों, खास तौर पर अस्पतालों, लेकिन साथ ही बंदीगृहों और जन अदालतों ने देश के ढेर सारे हिस्सों में 1999 से ही बड़ी लेकिन अज्ञात संख्या में फालुन गोंग के शांतिपूर्ण राजनीतिक बंदियों की हत्या की। भारी कीमत पर बेचने के लिए गुर्दा, यकृत, कॉर्निया और हृदय समेत महत्वपूर्ण अंग बिना सहमति के छीने गए। कई बार तो ऐसा विदेशियों को बेचने के लिए किया गया जिन्हें अपने गृह देशों में ऐसे अंगों के स्वैच्छिक दान के लिए लंबे समय तक इंतजार करना पड़ता है।

हम यह आकलन करने में असमर्थ हैं कि उनमें से कितने को किसी आरोप के लिए, गंभीर या जैसा भी हो, दोषी ठहराया गया था क्योंकि इस तरह की सूचना चीनी नागरिकों और विदेशियों दोनों के लिए अनुपलब्ध प्रतीत होती है। आठ साल पहले राष्ट्रपति च्यांग ने एक शांतिपूर्ण स्वैच्छिक संगठन पर प्रतिबंध लगा दिया क्योंकि उन्हें लगा कि यह चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के प्रभुत्व के लिए खतरा हो सकता है और हमें ऐसा प्रतीत होता है कि डाक्टरों ने अंगों के लिए उससे जुड़े लोगों को वास्तव में हत्याएं की।

हमारा निष्कर्ष केवल एक साक्ष्य से नहीं, बल्कि यह टुकड़े–टुकड़े में उन तमाम साक्ष्यों को जोड़ने से निकला है जिनका हमने अध्ययन किया। हमने जिन साक्ष्यों पर विचार किया उनके हर हिस्से की अपने आप में पुष्टि की जा सकती है, और ज्यादातर मामलों में, वे अकाट्य हैं।

एक साथ पेश करने पर वे एक घृणित मुकम्मल तस्वीर पेश करते हैं। यह उनका संयोजन है जिसने हमें प्रभावित किया।

I. सिफारिश

a) सामान्य

1) मानवाधिकार पर कनाडा और चीन के बीच मौजूदा बातचीत बंद होनी चाहिए। पीछे मुड़ कर देखने से पता लगता है कि सरकार ने वार्ता में भागीदारी पर सहमति जता कर गलती की है क्योंकि कनाडा अब तत्कालीन संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग के समक्ष चीन की आलोचना करने वाले प्रस्ताव का सह–प्रायोजन नहीं करता।

2) अंतरराष्ट्रीय रेड क्रास समिति या अन्य मानवाधिकार या मानवीय संगठनों के माध्यम से विश्व समुदाय के निरीक्षण के लिए श्रम शिविरों समेत तमाम बंदीगृहों को खोला जाए।

3) गावो झिशेंग के खिलाफ सजा खत्म की जाए। अपना पेशा चलाने का उनका अधिकार बहाल किया जाए।

4) चीन और कनाडा समेत यातना के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय संधि के नए पक्ष बने तमाम देश यातना के खिलाफ संधि पर वैकल्पिक प्रोटोकोल स्वीकार करें।

b) अंगों की प्राप्ति

5) चीन में बंदियों से मानव अंगों की प्राप्ति बंद की जाए।

6) चीन में सेना अंग प्रतिरोपण कारोबार से हटे।

7) सुनियोजित ढंग से या व्यापक स्तर पर अनिच्छुक दानकर्ताओं से अंगों की प्राप्ति मानवता के खिलाफ अपराध है। अपराध उन्मूलन से जुड़े चीनी अधिकारियों को संभावित कानूनी कार्रवाई के उद्देश्य से अनिच्छुक दानकर्ताओं से अंगों की प्राप्ति के आरोपों की जांच करनी चाहिए।

8) दूसरे देशों को सहमति के बगैर अंगों की प्राप्ति में भागीदारी पर सजा का प्रावधान करते हुए अपरदेशीय कानून बनाने चाहिए।

9) सरकारी वित्तपोषण तंत्रों को विदेशों में वयवसायिक अंग प्रतिरोपण करवाने पर रकम अदायगी नहीं करनी चाहिए और इस तरह के प्रतिरोपण का लाभ लेने वालों को उपचारोपरांत सेवा के लिए वित्तपोषण रोक देनी चाहिए।

10) तमाम देश चीन में कैदियों के अंगों की तस्करी में संलिप्तता के लिए जाने जाने वाले लोगों का अपने यहां प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दें।

11) जब तक चीन कैदियों से किसी भी प्रकार के अंगों की प्राप्ति नहीं रोकता,

i) विदेशी सरकारें अंगों या शरीर विषयक प्रतिरोपण के प्रशिक्षण के उद्देश्य से विदेशों की यात्रा करना चाह रहे चीनी डाक्टरों को वीजा जारी नहीं करें,

ii) विदेशी चिकित्सीय प्रतिरोपण कर्मियों को प्रतिरोपण सर्जरी में प्रशिक्षण या गठबंधन के लिए चीन की यात्रा नहीं करें,

iii) अंग प्रतिरोपण संबंधित बौद्धिक पत्रिकाओं में चीनी अनुभवों पर आधारित योगदानों को खारिज कर दिया जाए,

iv) विदेशों के चिकित्साकर्मी अपने मरीजों को अंग प्रतिरोपण सर्जरी के लिए चीन जाने से सक्रियतापूर्वक हतोत्साहित करें,

v) फार्मास्युटिकल कंपनियां एंटी–रिजेक्शन दवाइयां या केवल प्रतिरोपण सर्जरी में ही काम आने वाली अन्य दवाइयों का निर्यात चीन को नहीं करें।

vi) देश चीन को एंटी–रिजेक्शन दवाइयां या प्रतिरोपण सर्जरी में ही काम आने वाली अन्य दवाइयों के निर्यात पर रोक लगाएं।

12) अंग प्रतिरोपण के लिए चीन भेजने या इसके संबंध में चीन के साथ कोई सहयोग करने से पहले विदेशी पेशेवरों पर यह निर्धारित करने की जिम्मेदारी हो कि चीन में अंग दान का स्रोत स्वैच्छिक है।

13) हर देश का चिकित्सा पेशा एक स्वैच्छिक सूचना प्रणाली स्थापित करे जिसमें अंग प्रतिरोपण के लिए चीन जा रहे मरीजों के बारे में संपूर्ण सूचना रखी जाए।

14) चीनी अस्पताल हरेक प्रतिरोपण के स्रोत का रिकार्ड रखे। ये रिकार्ड अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार अधिकारियों के निरीक्षण के लिए उपलब्ध हों।

15) हरेक अंग प्रतिरोपण दानकर्ता लिखित में सहमति दे। यह सहमति अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार अधिकारियों के निरीक्षण के लिए उपलब्ध हों।

16) चीन सरकार अपने नागरिकों से स्वैच्छिक अंग दान को बढ़ावा दे।

17) विदेशी सरकारे अपने नागरिकों को यात्रा हिदायत जारी करे और उन्हें आगाह करे कि चाहे मौत की सुनाए गए हों या फालुन गोंग अभ्यासी हों, चीन में लगभग तमाम अंग प्रतिरोपण के लिए अंग असहमत कैदियों से प्राप्त किए जाते हैं।

c) फालुन गोंग

18) फालुन गोंग अभ्यासियों पर दमन, उन्हें कैद करना और उनके साथ दुर्व्यवहार खत्म किया जाए।

19) फालुन गोंग अभ्यासियों से अंगों की प्राप्ति पर रोक लगाई जाए।

20) इस रिपोर्ट में जिन आरोपों को संबोधित किया गया है उन्हें सरकारी, गैर–सरकारी और अंतर–सरकारी मानवाधिकार संगठन गंभीरता से लें और अपना खुद का निर्धारण करें कि ये सच हैं या नहीं।

J. टिप्पणी

अनिच्छुक फालुन गोंग अभ्यासियों से अंगों की प्राप्ति पर रोक लगाने की सिफारिश को स्वीकार करने का मतलब होगा ये आरोप सही हैं। हमने और दूसरी जो सिफारिशें की हैं, उनमें यह स्वीकार करने की जरूरत नहीं है कि ये आरोप सही हैं। किसी भी मामले में हम दूसरी सिफारिशों को स्वीकार करने की सलाह देते हैं।

ज्यादातर सिफारिशों का मतलब है और चाहे आरोप गलत हों या सही, उन्हें लागू किया जा सकता है। अनेक सिफारिशें अंतरराष्ट्रीय समुदाय को संबोधित हैं जिनमें समुदाय को अंग प्रतिरोपण संबंधी अंतरराष्ट्रीय मानकों के प्रति चीन में सम्मान को बढ़ावा देने के लिए कहा गया है।

हम सब को मालूम है कि चीन सरकार इन आरोपों से इनकार करती है। हमारी सलाह है कि चीन सरकार अपने इस इनकार को सबसे विश्वसनीय और प्रभावी ढंग से पेश करने के लिए उसे संबोधित तमाम सिफारिशों को लागू कर दे जिन्हें लागू किया जा सकता है, चाहे ये आरोप गलत हों या सही हों। अगर इन सिफारिशों को लागू किया गया तो जिन आरोपों पर यहां विचार किया गया है, उनको फिर नहीं लगाया जा सकेगा।

इन आरोपों के प्रति जिन लोगों का संशय है, हम उनसे पूछते हैं कि वे खुद से पूछें कि वे किसी भी राज्य में इन आरोपों को सच्चाई बनने से रोकने के लिए क्या करेंगे। इस तरह की कथित गतिविधियों को रोकने के लिए एहतियात की सहज बुद्धि की सूची चीन से पूरी तरह गायब है।

सिर्फ चीन ही नहीं, हरेक राज्य को अनिच्छुक, हाशिए पर रहने वाले कमजोर लोगों से अंगों की प्राप्ति को रोकने के लिए उपाय उठाने की जरूरत है। इन आरोपों के बारे में कोई जो कुछ भी सोचता हो, हम यह दोहराते हैं कि हम उसे सही मानते हैं, यहां चर्चा की गई इस तरह की गतिविधियों को रोकने के मामले में चीन में उल्लेखनीय रूप से रक्षा उपाय नहीं हैं। जब तक हालिया कानून प्रभावी नहीं होगा, यहां चर्चित दुर्व्यवहारों को रोकने के लिए बहुत से बुनियादी एहतियाती कदम नहीं उठाए जाएंगे। जब तक उसे समग्र रूप से लागू नहीं किया जाता, वह कानून प्रभावी नहीं होगा।

इसके अनेक कारण हैं कि सजाए मौत क्यों गलत है। सजाए मौत दने वालों की असंवेदनशीलता कोई छोटा कारण नहीं है। जब कोई राज्य अपने आरोपों के लिए पहले ही बंदीगृह में बंद रक्षाहीन इंसानों को मारता है, उसके लिए अगला कदम उठाना, बिना सहमति के उनके अंग हासिल करना, आसान हो जाता है। यह एक ऐसा कदम है जिसे चीन ने निस्संदेह उठाया है। जब कोई राज्य सजाए मौत पाए कैदियों के अंग उनकी सहमति के बगैर हासिल करता है, तो उसके लिए एक दूसरा कदम उठाना, तिरस्कृत एवं व्यक्तित्व से वंचित किए गए बचाव विहीन दूसरे कैदियों से अंग हासिल करना बहुत आसान और लुभावना हो जाता है, विशेषकर तब जब उससे भारी रकम बनाई जा सकती है। चीन सरकार फालुन गोंग अभ्यासियों से अंग हासिल करने के हमारे निष्कर्षों के बारे में चाहे जो भी सोचती हो, हम उससे आग्रह करते हैं कि वह अनिच्छुक लोगो से अंगों की प्राप्ति की जरा भी संभावना को खत्म करने के लिए रक्षात्मक कार्रवाई करे।

तमाम सम्मानपूर्वक दाखिल,

डेविड माटास　　　　　　　　　　डेविड किलगर

परिशिष्ट 1 सीआईपीएफजी का आमंत्रण पत्र

24 मई 2006
प्रतिः श्री डेविड मटास एवं श्री डेविड किलगर

अमेरिका के वाशिंगटन डीसी में गैर सरकारी संगठन के रूप में पंजीकृत, और ओंटारियो, कनाडा के ओटावा में शाखा के रूप में कार्यरत कोएलिशन टू इंवेस्टिगेट द परसिक्युशन ऑफ फालुन गोंग इन चाइना (सीआईपीएफजी) इन आरोपों की जांच के लिए आपकी सहायता चाहता है कि चीन जनगणराज्य की सरकार की राज्य संस्थाएं और कर्मचारी जीवित फालुन गोंग अभ्यासियों से अंग प्राप्त कर रहे हैं और इस प्रक्रिया में अभ्यासियों की हत्या कर रहे हैं। कोअलिशन को इन आरोपों की पुष्टि के लिए साक्ष्य भी मिले हैं, लेकिन उसे मालूम है कि कुछ लोग इसपर अनिश्चित हैं कि ये सही है या नहीं और कुछ लोग इनसे इनकार करते हैं।

कोअलिशन को मालूम है कि आप यह जांच कोअलिशन या किसी अन्य संगठन/ सरकार से स्वतंत्र रूप से करेंगे। आप इकट्ठा किए गए साक्ष्यों के आधार पर अपने निष्कर्षों की रिपोर्ट पेश करने या किसी नतीजा पर पहुंचने के लिए स्वतंत्र हैं।

कोअलिशन रसीदें पेश करने पर तमाम खर्चों का भुगतान करेगा। हम समझते हैं कि आप अपने काम के लिए किसी शुल्क की मांग नहीं करेंगे।

आपके काम करने का तरीका पूरी तरह आपका अपना चुना हुआ होगा। हम समझते हैं कि आप अपनी रिपोर्ट 30 जून 2006 तक पेश कर देंगे।

इस महत्वपूर्ण कार्यभार को संभालने पर सहमति जताने के लिए धन्यवाद।

आपका

जॉन जॉ, पीएचडी
अध्यक्ष, कोएलिशन टू इंवेस्टिगेट द परसिक्युशन ऑफ फालुन गोंग
पताः 106 जी, सेंट एसडब्ल्यू, वाशिंगटन, डीसी यूएसए 20024
वेबः www. cipfg.org
टेलीफानः (781) 710–4515 फैक्सः (202) 234–7113
ईमेलः info@cipfg.org

परिशिष्ट 1 सीआईपीएफजी का आमंत्रण पत्र

24 मई 2006
प्रतिः श्री डेविड मटास एवं श्री डेविड किलगर

अमेरिका के वाशिंगटन डीसी में गैर सरकारी संगठन के रूप में पंजीकृत, और ओंटारियो, कनाडा के ओटावा में शाखा के रूप में कार्यरत कोएलिशन टू इंवेस्टिगेट द परसिक्युशन ऑफ फालुन गोंग इन चाइना (सीआईपीएफजी) इन आरोपों की जांच के लिए आपकी सहायता चाहता है कि चीन जनगणराज्य की सरकार की राज्य संस्थाएं और कर्मचारी जीवित फालुन गोंग अभ्यासियों से अंग प्राप्त कर रहे हैं और इस प्रक्रिया में अभ्यासियों की हत्या कर रहे हैं। कोअलिशन को इन आरोपों की पुष्टि के लिए साक्ष्य भी मिले हैं, लेकिन उसे मालूम है कि कुछ लोग इसपर अनिश्चित हैं कि ये सही है या नहीं और कुछ लोग इनसे इनकार करते हैं।

कोअलिशन को मालूम है कि आप यह जांच कोअलिशन या किसी अन्य संगठन/ सरकार से स्वतंत्र रूप से करेंगे। आप इकट्ठा किए गए साक्ष्यों के आधार पर अपने निष्कर्षों की रिपोर्ट पेश करने या किसी नतीजा पर पहुंचने के लिए स्वतंत्र हैं।

कोअलिशन रसीदें पेश करने पर तमाम खर्चों का भुगतान करेगा। हम समझते हैं कि आप अपने काम के लिए किसी शुल्क की मांग नहीं करेंगे।

आपके काम करने का तरीका पूरी तरह आपका अपना चुना हुआ होगा। हम समझते हैं कि आप अपनी रिपोर्ट 30 जून 2006 तक पेश कर देंगे।

इस महत्वपूर्ण कार्यभार को संभालने पर सहमति जताने के लिए धन्यवाद।

आपका

जॉन जॉ, पीएचडी
अध्यक्ष, कोएलिशन टू इंवेस्टिगेट द परसिक्युशन ऑफ फालुन गोंग
पताः 106 जी, सेंट एसडब्ल्यू, वाशिंगटन, डीसी यूएसए 20024
वेबः www. cipfg.org
टेलीफानः (781) 710–4515 फैक्सः (202) 234–7113
ईमेलः info@cipfg.org

परिशिष्ट 2. डेविड मटास की जीवनी

जन्म विन्नीपेग, मैनीटोबा में, 29 अगस्त 1943; हैरी एवं एस्थर (स्टीमैन) मटास के पुत्र; घर का पताः 1146 मुलवेय एवेन्यू, विन्नीपेग, मैनीटोबा, आर3एम 1जे5; कार्यालय का पताः 602–225 वॉघन स्ट्रीट, विन्नीपेग, मैनीटोबा आर3सी 1टी7; टेलीफोन 204–944–1831; फैक्सः 204–942–1494; ईमेलः dmatas@mts.net

शिक्षाः मैनीटोबा यूनिवर्सिटी बी.ए. 1964; प्रिस्टन यूनिवर्सिटी एम.ए. 1965; ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी बी.ए. (न्यायशास्त्र) 1967 एवं एम.ए. (दीवानी कानून) 1968

व्यवसायिक शिक्षाः मिडल टेंपल यूनाइटेड किंगडम बैरिस्टर 1969, मैनीटोबा बार में आमंत्रित 1971

रोजगारः कनाडा सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस के लॉ क्लर्क 1968–69; फॉरेन ओनरशिप वर्किंग ग्रुप, कनाडा सरकार 1969, थांपसन, डॉर्फमैन एवं स्वीटमैन के साथ निबंधित 1970–71; कनाडा के सॉलिसिटर जनरल के विशेष सहायक 1971–72, श्वाट्र्ज, मैकजेनेट एवं वीनबर्ग के सहायक 1973–79; शरणार्थी, आव्रजन एवं मानवाधिकार कानून निजी प्रैक्टिस 1979–

कनाडा सुप्रीम कोर्ट मामलेः कनाडा (मानवाधिकार आयोग) बनाम टेलर (1999) 3 एस.सी.आर. 892; संदर्भ आरई एनजी प्रत्यपर्ण (कनाडा) (1991) 2 एस.सी.आर. 858; किंडलर बनाम कनाडा (न्याय मंत्री) (1991) 2 एस.सी.आर. 779; कनाडियन काउंसिल आफ चर्चेज बनाम कनाडा (रोजगार एवं आव्रजन मंत्राी) (1992) 1 एस.सी.आर. 236; देहगानी बनाम कनाडा (रोजगार एवं आव्रजन मंत्री) (1993) 1एस.सी.आर. 1053; आर बनम फिंटा (1994) 1 एससी.आर 701; रिजा बनाम कनाडा (1994) 2 एस.सी.आर 394; रॉस बनाम न्यू ब्रंसविक स्कूल डिस्ट्रिक्ट नं. 15 (1996) 1 एस.सी.आर 825; कनाडा (मानवाधिकार आयोग) बनाम कनाडियन लिबर्टी नेट (1998) 1 एस.सी.आर 626; पुष्पनाथन बनाम कनाडा (नागरिकता एवं आव्रजन मंत्री) (1998) 1एस.सी.आर. 982; आर बनाम शार्पे (2001) 1 एस.सी.आर. 45; अमेरिका बनाम बर्न्स (2001) 1 एस.सी.आर. 283; सुरेश बनाम कनाडा (नागरिकता एवं आव्रजन मंत्री) (2002) 1 एस.सी.आर. 3; चियू बनाम कनाडा (नागरिकता एवं आव्रजन मंत्री) 1 एस.सी.आर. 84; श्रेबर बनाम कनाडा (अटार्नी जनरल) (2002) 3 एस.सी.आर. 269; गॉसेलिन बनाम क्यूबेक (अटार्नी जनरल) (2002) 4 एस.सी.आर. 429; सिंडिकेट नार्थक्रेस्ट बनाम एमसेलेम (2004) 2 एस.सी.आर. 551; मुगेसेरा बनाम एम.सी.आई. 2005 एससीसी 40; एस्टेबान बनाम एम.सी.आई 2005 एससीसी 51

सरकारी नियुक्तियांः
संयुक्त राष्ट्र महासभा 1980 के कनाडियाई प्रतिनिधिमंडल के सदस्य; कार्यबल आव्रजन व्यवहार एवं प्रक्रियाएं 1980–81;अंतरराष्ट्रीय अपराध अदालत पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में कनाडाई प्रतिनिधिमंडल के सदस्य 1998; होलोकॉस्ट पर स्टाकहोम अंतरराष्ट्रीय फोरम में कनाडाई प्रतिनिधिमंडल के सदस्यए 2000; इंटरनेशनल सेंटर फॉर ह्यूमन राइट्स एंड डेमोक्रेटिक डेवलपमेंट के निदेशक जो बाद में राइट्स एंड डेमोक्रेसी बन गया 1997–2003;

आर्गनाइजेशन इन सिक्युरिटी एंड कोआपरेशन इन यूरोप कान्फ्रेंसेज ऑन ऐंटीसेमिटिज्म वियेना 2003 एवं बर्लिन 2004 में कनाडाई प्रतिनिधिमंडल के सदस्य।

अकादमिक नियुक्तियां: संवैधानिक कानून के लेक्चरर, मैकगिल यूनिवर्सिटी 1972–73; परिचयात्मक अर्थशास्त्र, कनाडाई आर्थिक समस्याएं 1982, अंतरराष्ट्रीय कानून 1985, नागरिक अधिकार 1986–88, आव्रजन एवं शरणार्थी कानून 1989– के लेक्चरर, मैनिटोबा यूनिवर्सिटी

स्वैच्छिक गतिविधियां: कनाडा में इंटरनेशनल डिफेंस एंड ऐड फंड फॉर साउथ अफ्रीका के निदेशक 190–91;
कनाडा–साउथ अफ्रीका कोऑपरेशन के निदेशक 1991–93;
कनाडियन हेलसिंकी वाच ग्रुप के सह अध्यक्ष 1985–;
मैनिटोबा एसोसिएशन ऑफ राइट्स एंड लिबर्टीज के निदेशक 1983–87;
कनाडियन इंस्टीट्यूट ऑफ हिब्रिउ यूनिवर्सिटी की विन्नीपेग शाखा के बोर्ड सदस्य, 1993–;
बियोंड बार्डर्स के संस्थापक सदस्य एवं कानूनी सलाहकार;
ईसीपीएटी (एंड चाइल्ड पोर्नोग्राफी, चाइल्ड प्रोस्टिच्यूशन एंड ट्रैफिकिंग) 2002 बैंकाक, 2005 रिया दे जनेरो के इंटरनेशनल असेंबली के मॉडरेटर;

एम्नेस्टी इंटरनेशनल: अंतरराष्ट्रीय कार्यसमिति के जनादेश पर स्थायी समिति के सदस्य, 1993–99, कनाडाई खंड के कानूनी संयोजक (अंग्रेजी भाषी शाखा) 1980–; ऐंटी इंप्यूनिटी वर्किंग ग्रुप के सदस्य 2002–2005;

बनाए ब्रीथ कनाडा: मानवाधिकार के चेयर लीग, 1983–85; वरिष्ठ मानद सलाहकार 1989–, उपाध्यक्ष 1996–1998;

कनाडियन बार एसोसिएशन: संविधान पर समिति के सदस्य 1977–78, संवैधानिक एवं अंतरराष्ट्रीय कानून खंड के अध्यक्ष 1979–82, आव्रजन कानून खंड के अध्यक्ष 1996–97, कानूनी पेशे में जीय समता पर कार्यसमूह के सदस्य 1994–2000, कनाडाई मानवाधिकार अधिनियम की समीक्षा पर कार्यसमूह के अध्यक्ष 1999, फेडरल कोर्ट बार बेंच लियाजां कमिटी के सदस्य 1999–, अध्यक्ष 2004–, जातीय समता कार्यान्वयन समिति के सदस्य 2000–2004, एवं अध्यक्ष 2002–2004, समता पर स्थायी समिति के सदस्य 2004–

कनाडियन काउंसिल फॉर रिफ्यूजीज: विदेशी सुरक्षा पर कार्यसमूह के अध्यक्ष 1989–91, कैरियर सैंक्शन्स पर अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञ समूह के सदस्य, 1990–91, विदेशी सुरक्षा पर कार्यबल के चेयर 1992, अध्यक्ष 1991–95।

कनाडियन ज्यूइश कांग्रेस: युद्ध अपराध पर कानूनी समिति के चेयर 1981–84; जातीय संबंध एवं कानून परियोजना के को–चेयर 1985–87;

ट्रायल आब्जर्वेशनः एडी कार्थन, लेक्जिंगटन, मिसीसिपी का अभियोजन एम्नेस्टी इंटरनेशनल के लिए अक्तूबर एवं नवंबर 1982; डेनिस बैंक्स, कस्टर, साउथ डैकोटा को सजा, एम्नेस्टी इंटरनेशनल के लिए, अक्तूबर 1984; मैरियोन इलिनायस जेल के खिलाफ कैदियों का मुकदमा, एम्नेस्टी इंटरनेशनल के लिए, जनवरी एवं जून 1985; सैंक्चुअरी ट्रायल, टस्कन अरिजोना इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर ज्यूरिस्ट्स के लिए, नवंबर 1985, अप्रैल 1986; फिलिबर्टो ओजेडा रियोस, सान जुआन, प्यूर्टो रिको का अभियोजन, एम्नेस्टी इंटरनेशनल के लिए, अगस्त 1989; एनहादी, ट्यूनिस, ट्यूनिशिया का अभियोजन, ह्यूमन राइट्स वाच एवं इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स लॉ ग्रुप के लिए, अगस्त 1990; क्लेम्ड कंशेनशस आब्जेक्टर्स, कैंप लेज्यून, नार्थ कैरोलिना का अभियोजन, एम्नेस्टी इंटरनेशनल के लिए, जून 1991; ग्रेनाडा सेवन, ग्रेनाडा को सजा, ह्यूमन राइट्स वाच के लिए; मार्कोस की यातना के पीड़ितों को मुआवजे के लिए मार्कोस की संपत्ति के खिलाफ दीवानी मुकदमा, होनोलुलू, हवाई इंटरनेशनल कमिशन ऑफ ज्यूरिस्ट्स के लिए, अगस्त 1992

चुनावी अनुभवः विन्नीपेग साउथ सेंट्रल से 1979, 1980, 1984 में लिबरल पार्टी के संसदीय उम्मीदवार; चुनाव पर्यवेक्षक – कनाडियन बार एसोसिएशन की तरफ से दक्षिण अफ्रीका 1994; कनाडा कोर के लिए उक्रेन, दिसंबर 2004; इंटरनेशनल इलेक्शन आब्जर्वेशन मिशन के लिए हैती में फरवरी 2006;

पार्टी अनुभवः मैनिटोबा की नीति समिति के चेयर एवं लिबरल पार्टी ऑफ कनाडा की राष्ट्रीय नीति समिति के सदस्य 1973–1978; प्लेटफार्म समिति के सदस्य, 1980 चुनाव।

सम्मानः गवर्नर जनरल्स कनफेडरेशन मेडल 1992; ज्यूइश वार विक्टरी इन यूरोप 15वीं सालगिरह मेडल 1985; आउटस्टैंडिंग एचीवमेंट अवार्ड, मैनीटोबा एसोसिएशन ऑफ राइट्स एंड लिबर्टीज 1996; आनरी डाक्टरेट ऑफ लॉ, कानकार्डिया यूनिवर्सिटी 1996; डा. पर्सी बार्स्की ह्यूमनिटेरियन एवार्ड कनाडियन शारे जेदेक हास्पिल फाउंडेशन 1997; नेशनल काउंसिल ऑफ ज्यूइश वीमेन (विन्नीपेग शाखा) का सेंटेनियल कम्यूनिटी सर्विस एवार्ड 1997; लॉर्ड रीडिंग लॉ सोसाइटी ऑफ मांट्रियाल होनोउरी 1997; लीग फॉर ह्यूमन राइट्स ऑफ बिनाय ब्रीथ कनाडा मिडवेस्ट रीजन ह्यूमन राइट्स एचीवमेंट एवार्ड 1999; कम्यूनिटी लीग एड्यूकेशन एसोसिएशन मैनीटोबा ह्यूमन राइट्स एचीवमेंट एवार्ड 1999; बिनाय ब्रीथ कनाडा प्रेसिडेंशियल साइटेशन 2004, 2005; वैनकुवर इंटरफेथ ब्रदरहुड पर्सन आफ द इयर 2006।

पुस्तकें: "कनाडियन इमिग्रेशन लॉ", 1986; "जस्टिस डीलेडः नाजी वार क्रिमनल्स इन कनाडा", सूसन चैरेंडोफ के साथ 1987; "द सैंक्चूअरी ट्रायल", 1989; "क्लोजिंग द डोर्सः द फेल्यर्स ऑफ रिफ्यूजी प्रोटेक्शन", इलाना साइमन के साथ 1989; "नो मोरः द बैटल अगेन्स्ट ह्यूमन राइट्स वायलेशन्स" 1994; सह संपादन "द मशीनरी ऑफ डेथ" एम्नेस्टी इंटरनेशनल यूएसए 1995; "ब्लडी वर्ड्सः द हेट एंड फ्री स्पीच" 2000; "आफ्टरशॉकः ऐंटी जायोनिज्म एंड एंटीसेमिटीज्म", 2005

पांडुलिपियांः ''ब्रिंगिंग नाजी वार क्रिम्नल्स इन कनाडा टू जस्टिस'' बिनाय ब्रीथ कनाडा 1985; ''रेनेसां इन ट्यूनिस'' 1990; '' नाजी वार क्रिम्नल्स इन कनाडाः फाइव इयर्स आफ्टर'' बिनाय ब्रीथ कनाडा, 1992; ''रिफ्यूजी प्रोटेक्शन इन न्यू स्टेट्सः द किर्गिज रिपब्लिक'' कनाडियन हेलसिंकी वाच ग्रुप, 1998; ''व्हाट हैपेंड टू राउल वालेनबर्ग'', 1998; ''प्रिवेंटिंग सेक्सुअल एब्यूज इन ए पोलीगेमस कम्यूनिटी'' अप्रैल 2005

परिशिष्ट 3: डेविड किलगर की जीवनी

इस रिपोर्ट के उद्देश्य से निम्नलिखित ब्यौरे प्रासंगिक प्रतीत होते हैं:

डेविड मटास की तरह मेरा भी लालन–पालन विन्नीपेग में हुआ। मेरे नाना डैनियल मैकडोनाल्ड कई साल तक पोर्ताज ला प्रैरी में वकालत करते रहे और उसके बाद 18 साल तक मैनीटोबा प्रांत में चीफ जस्टिस के रूप में जिम्मेदारियां निभाई। मेरे दादा फ्रेड किलगर प्रांत के क्वीन्स बेंच कोर्ट में जस्टिस बनने से पहले ब्रैंडन में वकालत करते थे। मेरे पिता डेविड ई किलगर 16 साल तक ग्रेट वेस्ट लाइफ एश्योरेंस कंपनी के अध्यक्ष एवं सीईओ रहे।

मेरा ज्यूरिस डाक्टर (जेडी) टोरंटो यूनिवर्सिटी से 2000 में है जब यूनिवर्सिटी ने 1966 से एलएलबी फिर से जारी किए। मैं उन्ही में शमिल था। मैंने 1969 में यूनिवर्सिते दे पेरिस में संवैधानिक कानून में दाक्त्रात दे लायूनिवर्सिते कार्यक्रम में प्रवेश लिया, लेकिन डिग्री पूरा नहीं कर पाया।

ब्रिटिश कोलंबिया, मैनीटोबा और एल्बर्टा में मुझे वकालत के लिए प्रवेश मिला और निम्न रूप से वकालत की:

ब्रिटिश कोलंबिया
– इकल गोल्डी के मातहत वैंकूवर की लॉ फर्म रसेल, डुमॉलिन के साथ 1966–67 में निबंधित हुआ।
– 1968 के संघीय चुनाव तक सहायक वैंकुवर सिटी अभियोजक के रूप में काम किया जब मैं वैंकुवर सेंटर से संसद के चुनाव में हिस्सा लिया।

ओंटारियो
– ओटावा में 1968 में संघीय न्याय मंत्रालय में सिविल लिटिगेशन सेक्शन में शामिल हुआ। बाद में टैक्स लिटिगेशन में चला गया।

मैनीटोबा
– फ्रांस में अध्ययन के बाद कनाडा लौटने पर 1970 में विनीपेग की लॉ फर्म पिटबाल्डो हॉस्किन से जुड़ गया और लिटिगेशन तथा फौजदार बचाव कार्य करता रहा।
– बाद में पश्चिमी मैनीटोबा में डॉफिन ज्यूडिश्यिल डिस्ट्रिक्ट के लिए शाही अटार्नी नियुक्त हुआ।

एल्बर्टा
– 1972 में एल्बर्टा अटार्नी जनरल का सीनियर एजेंट नियुक्त हुआ और जब तक 1979 में एडमंटन से हाउस ऑफ कामन्स में निर्वाचित नहीं हुआ मुख्य रूप से फौजदारी और पर्यावरण संबंधी अभियोजन का काम देखता रहा।

हाउस ऑफ कामन्स
– न्याय समिति में 1980–84 के दौरान जिम्मेदारियां निभाई।
– संवैधानिक मामलों पर हाउस–सीनेट संयुक्त समिति की जिम्मदारियां निभाई।
– 1980–1983 में आधिकारिक विपक्ष के लिए अपराध उन्मूलन समालोचक।
– कमीटीज ऑफ होल हाउस के डिप्टी स्पीकर एवं चेयर, 1993–97।
– ह्यूमन राइट्स एंड इंटरनेशनल डेवलपमेंट्स की उप समिति के चयर (2004–2005)

कनाडा सरकार
– विदेश मंत्री, लातीन अमेरिका और अफ्रीका, 1997–2002
– विदेश मंत्री, एशिया–प्रशांत, 2002–2003

मेरे बारे में अतिरिक्त जानकारी मेरी वेबसाइट (http://david-kilgour.com) में हेडर पेज पर "एबाउट डेविड" के आइकन के माध्यम से उपलब्ध है।

1 The Black Book of Communism, Harvard University Press (1999), Jung Chand and Jon Halliday Mao: The Unknown Story, Knopf, 2005.

2 See Amnesty International and Human Rights Watch annual reports for China.

3 "The CCP Should Be Condemned for Criminalizing Gao Zhisheng for Writing to The Epoch Times" The Epoch Times, December 24, 2006

4 "The high price of illness in China", Louisa Lim, BBC News, Beijing, 2006/03/02

5 "Public Health in China: Organization, Financing and Delivery of Services". July 27, 2005, Jeffrey P. Koplan

6 "Implementation of the International Covenant on Economic Social and Cultural Rights in the People's Republic of China", April 14, 2005, paragraph 69, page 24.

7 <http://www.309yizhi.com/webapp/center/intro.jsp>. This page was available in early July, 2006 and has been removed afterwards. The archived page is at http://archive.edoors.com/render.php?uri=http%3A%2F%2Fwww.309yizhi.com%2Fwebapp%2Fcenter%2Fintro.jsp&x=0&y=0.

8 http://www.chinadaily.com.cn/china/2006-05/05/content_582847.htm (2006-05-05, China Daily) English
Archived page:
http://archive.edoors.com/content5.php?uri=http://www.chinadaily.com.cn/china/2006-05/05/content_582847.htm

9 http://www.transplantation.org.cn/html/2006-04/467.html Life weekly, 2006-04-07Archived page:
http://archive.edoors.com/render.php?uri=http%3A%2F%2Fwww.transplantation.org.cn%2Fhtml%2F200604%2F467.html+&x=26&y=11

10 http://en.zoukiishoku.com/list/qa2.htm, Archived page:
http://archive.edoors.com/render.php?uri=http%3A%2F%2Fen.zoukiishoku.com%2Flist%2Fqa2.htm&x=19&y=11

11 http://en.zoukiishoku.com/list/volunteer.htm Archived at:
http://archive.edoors.com/render.php?uri=http%3A%2F%2Fen.zoukiishoku.com%2Flist%2Fvolunteer.htm+&x=8&y=9

12 The front page has been altered. The archived page is at:
http://archive.edoors.com/content5.php?uri=http://www.ootc.net/special_images/ootc1.png

13 http://www.transorgan.com/apply.asp Archived at :
http://archive.edoors.com/render.php?uri=http%3A%2F%2Fwww.transorgan.com%2Fapply.asp&x=15&y=8

14 Canadian Organ Replacement Register, Canadian Institute for Health Information,
(http://www.cihi.ca/cihiweb/en/downloads/CORR-CST2005_Gill-rev_July22_2005.ppt), July 2005

15 Donor Matching System, The Organ Procurement and Transplantation Network (OPTN)
http://www.optn.org/about/transplantation/matchingProcess.asp

16 The original page has been altered. Older versions can still be found at Internet Archive:
http://web.archive.org/web/20050305122521/http://en.zoukiishoku.com/

17 http://en.zoukiishoku.com/list/facts.htm or use archived version at:
http://archive.edoors.com/render.php?uri=http%3A%2F%2Fen.zoukiishoku.com%2Flist%2Ffacts.htm&x=24&y=12

18 http://en.zoukiishoku.com/list/qa.htm or use archived version:
http://archive.edoors.com/render.php?uri=http%3A%2F%2Fen.zoukiishoku.com%2Flist%2Fqa.htm&x=27&y=10

19 http://en.zoukiishoku.com/list/qa7.htm or use archived version:
http://archive.edoors.com/render.php?uri=http%3A%2F%2Fen.zoukiishoku.com%2Flist%2Fqa7.htm&x=35&y=10

20 The front page has been altered. Archived at:
http://archive.edoors.com/content5.php?uri=http://www.ootc.net/special_images/ooct_achievement.jpg
http://archive.edoors.com/content5.php?uri=http://www.ootc.net/special_images/ootc2.png

21 The front page has been altered. Archived at:
http://archive.edoors.com/content5.php?uri=http://www.ootc.net/special_images/ooct_case.jpg

http://archive.edoors.com/content5.php?uri=http://www.ootc.net/special_images/ootc1.png

22 http://www.health.sohu.com/20060426/n243015842.shtml Archived at: http://archive.edoors.com/content5.php?uri=http://health.sohu.com/52/81/harticle15198152.shtml

23 The URL of the removed page as of March 2005 in the Internet Archive is http://web.archive.org/web/20050317130117/http://www.transorgan.com/about_g_intro.asp

24 http://www.transorgan.com/apply.asp , Archived at : http://archive.edoors.com/render.php?uri=http%3A%2F%2Fwww.transorgan.com%2Fapply.asp&x=15&y=8

25 Yet, one can still go to the Internet Archive to find the information on this website from March 2006: http://archive.edoors.com/render.php?uri=http%3A%2F%2Fen.zoukiishoku.com%2Flist%2Fcost.htm+&x=16&y=11

26 Section 13.

27 “Falun Gong and Canada’s China policy”. David Ownby, vol. 56, International Journal, Canadian Institute of International Affairs, Spring 2001.

28 Danny Schechter, Falun Gong's Challenge to China, Akashic Books, 2000, pages 44 to 46.

29 http://web.amnesty.org/library/Index/engASA170282001

30 Despite the police recommendation, the Attorney General decided not to prosecute.

31 Appendix 6, (June 7, 1999) “Comrade Jiang Zemin’s speech at the meeting of the Political Bureau of CCCCP regarding speeding up the dealing with and settling the problem of ‘FALUN GONG’”

32 H. CON. RES. 188, CONCURRENT RESOLUTION, U.S http://thomas.loc.gov/cgi-bin/query/z?c107:hc188:

33 U.N. Commission on Human Rights: Report of the Special Rapporteur on torture and other cruel, inhuman or degrading treatment or punishment, Manfred Nowak, on his Mission to China from November 20 to December 2, 2005 (E/CN.4/2006/6/Add.6), March 10, 2006. (http://www.ohchr.org/english/bodies/chr/docs/62chr/ecn4-2006-6-Add6.doc)

34 Washington Post Foreign Service, “Torture Is Breaking Falun Gong: China Systematically Eradicating Group,” John Pomfret and Philip P. Pan, August 5, 2001. (http://www.washingtonpost.com/ac2/wp-dyn?pagename=article&node=&contentId=A33055-2001Aug4)

35 U.S. Department of State 2005 Country Reports on Human Rights Practices – China, March 8, 2006.

(http://www.state.gov/g/drl/rls/hrrpt/2005/61605.htm)

36 International Convention for the Protection of All Persons from Enforced Disappearance, Article 2.

37 http://www.chinapharm.com.cn/html/xxhc/2002124105954.html China Pharmacy Net, 2002-12-05
Archived page:
http://archive.edoors.com/content5.php?uri=http://www.chinapharm.com.cn/html/xxhc/2002124105954.html

38 “China to 'tidy up' trade in executed prisoners' organs,” The Times, December 03, 2005
http://www.timesonline.co.uk/article/0,,25689-1901558,00.html

39 “Beijing Mulls New Law on Transplants of Deathrow Inmate Organs”,
http://caijing.hexun.com/english/detail.aspx?issue=147&sl=2488&id=1430379
Caijing Magazine/Issue:147, Nov 28, 2005

40 Index of AI Annual reports:
http://www.amnesty.org/ailib/aireport/index.html, from here one can select annual
report of each year.

41 http://www.biotech.org.cn/news/news/show.php?id=864 (China Biotech Information Net, 2002-12-02)
http://www.chinapharm.com.cn/html/xxhc/2002124105954.html (China Pharmacy Net, 2002-12-05)
Archived page:
http://archive.edoors.com/content5.php?uri=http://www.chinapharm.com.cn/html/xxhc/2002124105954.html
http://www.people.com.cn/GB/14739/14740/21474/2766303.html (People’s Daily, 2004-09-07, from Xinhua News
Agency)

42 “The Number of Renal Transplant (Asia & the Middle and Near East)1989-2000,” Medical Net (Japan),
http://www.medi-net.or.jp/tcnet/DATA/renal_a.html

43 http://www.transplantation.org.cn/html/2006-03/394.html (Health Paper Net 2006-03-02)
Archived page:
http://archive.edoors.com/render.php?uri=http%3A%2F%2Fwww.transplantation.org.cn%2Fhtml%2F200603%2F394.html+&x=32&y=11

44 “CURRENT SITUATION OF ORGAN DONATION IN CHINA FROM STIGMA TO STIGMATA”, Abstract, The World Transplant Congress,
http://www.abstracts2view.com/wtc/
Zhonghua K Chen, Fanjun Zeng, Changsheng Ming, Junjie Ma, Jipin Jiang.
Institute of Organ Transplantation,
Tongji Hospital, Tongji Medical College, HUST, Wuhan, China.
http://www.abstracts2view.com/wtc/view.php?nu=WTC06L_1100&terms=

45 http://www.transplantation.org.cn/html/2006-03/400.html , (Beijing Youth Daily, 2006-03-06)

46 http://www.100md.com/html/DirDu/2004/11/15/63/30/56.htm , China Pharmaceutical Paper, 2004-11-15

47 Please see case #7 in appendix 5.

48 Please see case#4 in appendix 14.

49 http://unn.people.com.cn/GB/channel413/417/1100/1131/200010/17/1857.html (People's Daily Net and Union News Net, 2000-10-17). Archived at: http://archive.edoors.com/content5.php?uri=http://unn.people.com.cn/GB/channel413/417/1100/1131/200010/17/1857.html

50 According to Deputy Minister of Health, Mr. Huang Jiefu, http://www.transplantation.org.cn/html/200604/467.html (Lifeweekly, 2006-04-07). Archived at: http://archive.edoors.com/render.php?uri=http%3A%2F%2Fwww.transplantation.org.cn%2Fhtml%2F200604%2F467.html+&x=26&y=11

51 http://www.transplantation.org.cn/#html/2004-10/38.html (Life Weekly, 2004-10-18)

52 http://www.cq.xinhuanet.com/health/2006-04/04/content_6645317.htm (Xinhua News Agency, Chongqing branch, 2004-04-04)

53 http://www.liver-tx.net/EN/PressEN.htm54 http://www.bjcyh.com.cn

55 http://www.309yizhi.com/, Located in Beijing56 http://www.transorgan.com/about.asp

57 http://www2.sjtu.edu.cn/newweb/chinese/web3/school20/hospital1/01.htm

58 http://www.ootc.net/